CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

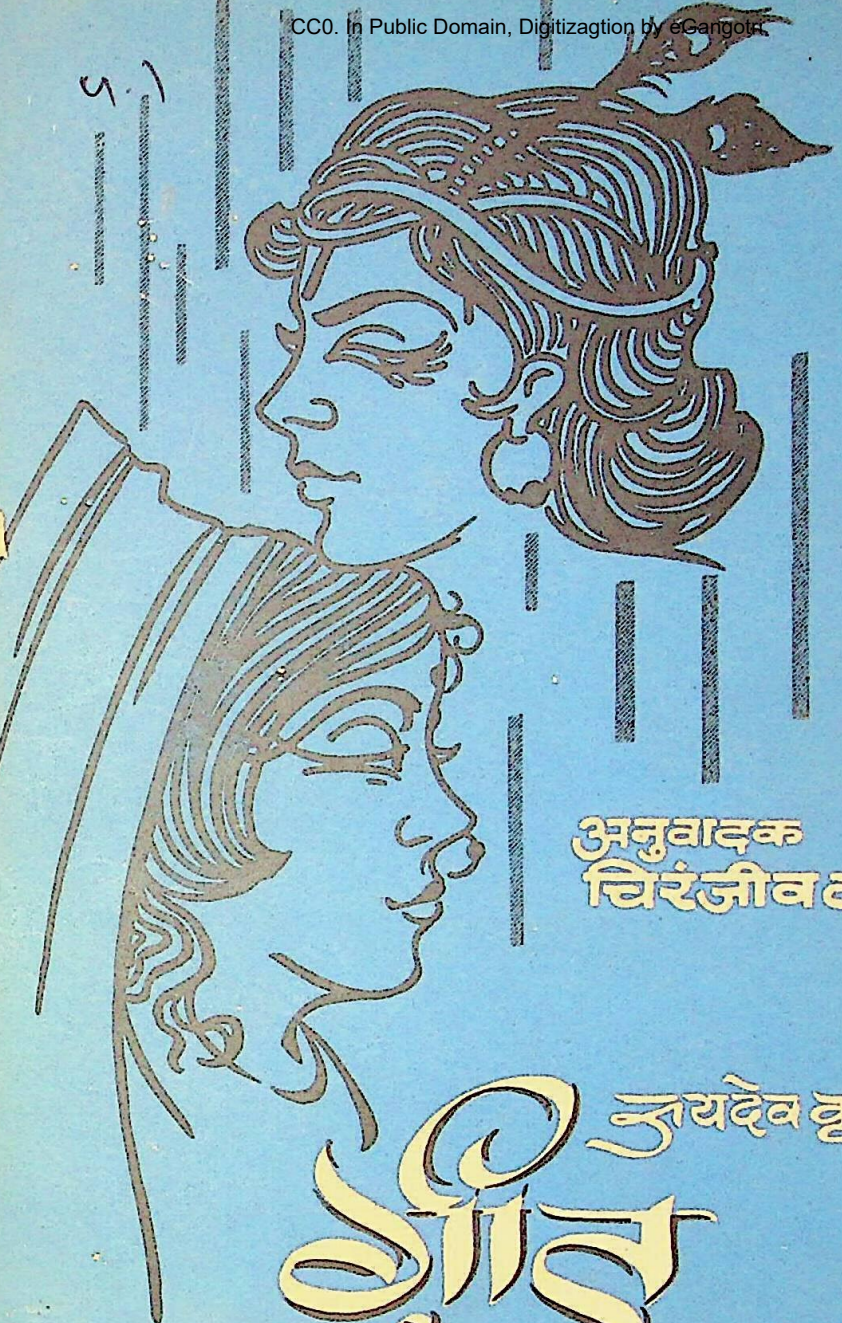

अनुवादक
चिरंजीव दास

जयदेव कृत

गीत गोविन्द

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

આદરણીય વાત્સ્યાયનજી

જોગ

સ્નેહ

13.12.76

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत-गोविन्द

मूल

जयदेव

अनुवाद

चिरंजीव दास

प्रकाशक

वासन्ती प्रकाशन

रायगढ़ (म० प्र०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

© सर्वाधिकार अनुवादक के अधीन

प्रथम संस्करण : १९६९

मूल्य : ४.०० रु०

प्रकाशक
वासन्ती प्रकाशन
रायगढ़ (म० प्र०)

मुद्रक
दुर्गा प्रिंटिंग वर्क्स
दरेसी २, आगरा–४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्वदीयं वस्तु गोविन्द !
तुभ्यमेव समर्पयेत्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुखबन्ध

गीत-गोविन्द जयदेव का विश्व-विश्रुत महाकाव्य है। संस्कृत साहित्य में इस महाकाव्य का अपना विशिष्ट स्थान है। जयदेव ने अपने को 'पण्डित कवि', 'कविनृप' आदि कहकर वर्णित किया है। प्रथम सर्ग के चतुर्थ श्लोक में उन्होंने अपने को उमापतिधर, शरण, गोवर्द्धनाचार्य और धोयी कवियों की तुलना में श्रेष्ठ कहा है। इसी तरह ग्रन्थ के अन्तिम श्लोकों में भी उन्होंने अपनी काव्य-कला का प्रशंसापूर्ण विज्ञापन किया है। गीत-गोविन्द के पाठकों को इन गर्वोक्तियों में अतिशयोक्ति की झलक नहीं दिखती।

जयदेव, जो बारहवीं शताब्दी में हो गए हैं, संस्कृत साहित्याकाश के अन्तिम देदीप्यमान नक्षत्र थे।

गीत-गोविन्द की भाषा, रचनाभंगि, स्वरमाधुर्य और शब्द-विन्यास सब जयदेव के अपने हैं। यदि गीत-गोविन्द न होता तो कोई यह विश्वास न करता कि संस्कृत में भी ऐसे ललित-मधुर गीतों की रचना हो सकती है।

गीत-गोविन्द की कथा-वस्तु बहुत छोटी-सी है। भगवती राधा भगवान् कृष्ण चन्द्र के प्रेम में व्याकुल होकर सघन कांतार में उनका अन्वेषण कर रही हैं। उनकी पीड़ा बढ़ जाती है। इसी समय सखी उन्हें दूर से कृष्ण को दिखाती है और कहती है कि किस तरह वे गोपियों के साथ रासक्रीड़ा में तन्मय हैं। राधा भगवान् को पाने के लिए आतुर हो उठती हैं। इधर भगवान् भी राधा को पाने हेतु उत्कण्ठित हो जाते हैं। वे समस्त गोपियों को त्याग कर उन्हें ढूँढने लगते हैं। पर वे इतना शीघ्र उन्हें कहाँ प्राप्त कर सकेंगे ? तृतीय से सप्तम सर्ग तक सखी द्वारा एक-दूसरे को मिलाने की चेष्टा चलती है। अष्टम सर्ग में भगवान् राधा के सम्मुख उपस्थित होते हैं किन्तु वे उनके द्वारा प्रताड़ित होकर चले जाते हैं। नवम सर्ग में सखी राधा को मनाती है। दशम सर्ग में भगवान् स्वयं उनका मान-भंग करते हैं। एकादश सर्ग में जाकर भगवान् राधा को पाने में सफल होते हैं। द्वादश सर्ग में कवि दोनों का पूर्ण मिलन साधित कर ग्रन्थ का उपसंहार करते हैं।

जयदेव ने ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही यह बता दिया है कि कौन गीत-गोविन्द को पढ़ने का अधिकारी है। जिसका मन हरि-स्मरण से सरस हो जाता है तथा जो विलास-कला में कुतूहली है वही इस कोमलकान्त पदावली को सुनने का अधिकारी है। यदि किसी में ये दोनों बातें नहीं हैं तो वह गीत-गोविन्द का रसास्वादन नहीं कर सकता। गीत-गोविन्द कई स्थानों में अश्लीलता से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग्रस्त है। यदि पाठक भगवान का भक्त नहीं है तो वह अश्लीलता के प्रभाव से बच नहीं सकता और यदि वह विलास-कला का प्रेमी नहीं है तो वह गीत गोविन्द का रसपान कर मुग्ध नहीं हो सकता।

जयदेव के जन्म-स्थान के बारे में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। जयदेव ने स्वयं अपना जन्म-स्थान केन्दुविल्व ग्राम बताया है। किन्तु इस नाम का एक ग्राम बंगाल के वीरभूम ज़िले में और एक उड़ीसा के पुरी ज़िले में है। इसलिए बंगाल और उड़ीसा दोनों ही जयदेव पर अपना दावा करते हैं। 'भक्तमाल', 'अलंकारशेखर' आदि प्राचीन ग्रन्थों में उनका जन्म-स्थान उत्कल ही बतलाया गया है। उनका जन्म-स्थान चाहे कोई भी हो, यह निर्विवाद है कि जयदेव पुरी में दीर्घकाल तक रहे, पुरी में ही पद्मावती नाम्नी कन्या से उनका विवाह हुआ, पुरी में ही उन्होंने श्री श्री जगन्नाथ को अपना गीत-गोविन्द समर्पित किया, पुरी की राजसभा में उनका सम्मान हुआ और पुरी से ही उन्होंने वृन्दावन को प्रस्थान किया। एक और बात जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है वह यह है कि पुरी के राजा ने श्री श्री जगन्नाथ मन्दिर में प्रत्यह गीत-गोविन्द के गायन की अनुमति दी। बाद में जब महाप्रभु चैतन्य ने पुरी के राजा से श्री श्री जगन्नाथ मन्दिर में प्रतिदिन अपना कीर्त्तन करवाने की माँग की तो यह माँग इसलिये अस्वीकार कर दी गई कि चैतन्य पुरी के राजा की प्रजा नहीं थे। उड़ीसा के शिल्प, साहित्य, भाषा, संस्कृति या यों कहिए कि इस प्रदेश की समग्र चेतना पर गीत-गोविन्द का जो प्रभाव पड़ा है वह आज तक अमिट है। ओड़िशी नृत्य और गीत-गोविन्द का अभिन्न सम्बन्ध है। ग्रामांचलों में भी ग्रामीण नृत्यकार जो संस्कृत से अनभिज्ञ हैं और ओड़िशी का स्थूल प्रदर्शन ही कर सकते हैं, गीत-गोविन्द के अष्टपदियों पर आधारित नृत्य करने में अपना गौरव समझते हैं। उड़ीसा में गीत-गोविन्द के इस व्यापक प्रभाव को देखते हुए यह स्वाभाविक-सा लगता है कि जयदेव का जन्म पुरी ज़िले में हुआ हो। किन्तु एक बात जो इस धारणा को शंकास्पद बना देती है वह यह है कि प्रथम सर्ग के चतुर्थ श्लोक में जयदेव ने अपनी तुलना जिन कवियों से की है वे सब बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन की राजसभा के समासद थे। तब प्रश्न उठता है क्या जयदेव स्वयं इस राजसभा के सभासद थे? इसका एक समाधान इस प्रकार हो सकता है। जयदेव के काल में पुरी न केवल चार धामों में से एक थी वरन् एक महान् सांस्कृतिक केन्द्र भी थी। भारत के कोने-कोने से संत, महात्मा, कवि और धर्माचार्य वर्ष-प्रतिवर्ष वहाँ एकत्रित होते थे। बंगाल के और दाक्षिणात्य से संत महात्मा विशेष रूप से पुरी में एकत्रित होते थे। ये विद्वान् पुरी की राजसभा में आदृत भी होते थे। यह सम्भव है कि जयदेव ने जिन समसामयिक कवियों से अपनी तुलना की है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उनसे उनका सम्पर्क पुरी में ही हुआ हो। यहाँ इतना और लिख देना अप्रासंगिक न होगा कि सन् १२०१-१२०२ में लक्ष्मणसेन खिलजी सैन्य द्वारा परास्त हो गये और उनकी राजसभा भंग हो गई। तब गोवर्द्धनाचार्य जो आर्यासप्तशती के रचयिता हैं अपने भाई उदयनाचार्य के साथ उड़ीसा चले आये। उदयनाचार्य ने गीत-गोविन्द पर टीका लिखी है।

भारतीय वाङ्मय में राधा का प्रवेश अपेक्षाकृत अर्वाचीन है। छांदोग्य उपनिषद् में भगवान् कृष्ण का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

'तद्धैतद् घोर आंगिरसः कृष्णाय
देवकीपुत्रायोक्त्वोवाच'

—छांदोग्य उपनिषद् ३.१७.६

पाणिनि (ईसा-पूर्व सप्तम-अष्टम शताब्दी) ने भी वासुदेव कृष्ण का स्मरण किया है; यथा—

'वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन्'

—पाणिनि ४.३.९८

बौधायन (ईसा-पूर्व सप्तम शताब्दी) के गृह्यसूत्र में **'ओं नमो भगवते वासुदेवाय'** मंत्र का उद्गायन किया गया है।

इस तरह हम देखते हैं कि भारतीय जनमानस में वासुदेव कृष्ण या देवकी-नंदन कृष्ण युग-युगों से प्रतिविम्बित रहे हैं किन्तु इस विशाल प्राचीन साहित्य में हमें राधा का प्रतिविम्ब कहीं नहीं दिखायी देता। यहाँ तक कि 'श्रीमद्भागवत' में भी राधा की चर्चा नहीं है। प्राचीन पुराणों में हरिवंश-पुराण में केवल एक ही स्थान में राधा का उल्लेख है किन्तु जिस श्लोक में यह उल्लेख है वह भी प्रक्षिप्त-सा लगता है। ब्रह्मवैवर्तपुराण जिसमें राधा का स्पष्ट एवं विशद वर्णन है अपेक्षाकृत बहुत ही अर्वाचीन है। विद्वानों का मत है कि राधा की कल्पना पहले पहल बारहवीं शताब्दी में कृष्ण भक्तों द्वारा की गई। जिस प्रकार शाक्तों के शिव के लिए शक्ति और सांख्यों के पुरुष के लिए प्रकृति ह्लादिनी शक्ति के रूप में उपलब्ध थीं उसी तरह वैष्णवों ने कृष्ण के लिए ह्लादिनी शक्ति के रूप में राधा की अवतारणा की। इस तरह राधा को हम वैष्णवों की मानस-पुत्री कह सकते हैं। जो कुछ भी हो अब स्थिति यह है कि हम कृष्ण-विहीन राधा की या राधा-विहीन कृष्ण की कल्पना तक नहीं कर सकते।

अन्त में इस अनुवाद के सम्बन्ध में दो शब्द। गीत-गोविन्द १२ सर्गों में विभाजित है। उसमें कुल मिलाकर ९२ श्लोक और २४ गीत—प्रत्येक सन्दर्भ में एक—हैं। गीत-गोविन्द जितना ललित-कोमल है उतना ही पाण्डित्यपूर्ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और दुरूह है। हिन्दी या किसी भी भाषा में उसका पद्यानुवाद सहज नहीं है। जब मैंने पहले-पहल यह कार्य हाथ में लिया तब मुझे आशा नहीं थी कि यह कार्य पूर्ण हो सकेगा। बीच में कई बार निराश भी होना पड़ा। किन्तु हरि की प्रेरणा या कहिये इच्छा से यह कार्य पूर्ण हो सका। अनुवाद कितना सफल हुआ है इसका निर्णय तो सुधी पाठक ही करेंगे। किन्तु अनुवाद के लिए मैंने जो कुछ सिद्धान्त स्थिर किए उन्हें यहाँ स्पष्ट कर देना आवश्यक है। जहाँ तक गीतों का सम्बन्ध है मेरा प्रयास यही रहा है कि उनका अनुवाद यथासम्भव मूल गीतों के छन्दों में हो। किन्तु श्लोकों के अनुवाद के लिए मैंने स्वतन्त्र छन्दबन्धों का उपयोग किया है। इसका कारण यह है कि मूल श्लोक संस्कृत वार्णिक वृत्तों में हैं और हिन्दी में वार्णिक वृत्तों का उपयोग न केवल कठिन वरन् अनुपयुक्त भी है। जहाँ तक भाषा का प्रश्न है मैंने उसे यथासम्भव गीत-गोविन्द की भाषा के सन्निकट—और अवश्य ही हिन्दी से दूर—रखा है। मैं समझता हूँ इससे गीत-गोविन्द की मूल झंकार की रक्षा हुई है। भाषा के अधिक हिन्दीकरण द्वारा शायद यह सम्भव न होता।

अन्त में मैं उन समस्त बन्धुओं को अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने इसके प्रकाशन के लिए मुझे प्रेरणा और सहायता दी।

बिलासपुर (म० प्र०)
नागपंचमी, संवत् २०२६
१८-८-१९६९

—चिरंजीव दास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रथम सर्ग

सामोद दामोदर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"मेघों से मेदुर अंबर, वन-भू तमाल से श्यामल,
रात्रि काल, हरि भीरु, राधिके ! पहुँचा दो इसको घर"
ऐसा नन्द-निदेश पा चले पथ-कुंजों में निर्भय
यमुन-तट-कृत राधा-माधव-रहस-केलियों की जय. १.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हृदय-मंदिर में कि जिसके चरित चित्रित भारती के,
चक्रवर्त्ती चारणों का पदों के पद्मावती के —
कृष्ण की रति-केलि-क्रीड़ा की कथा से युक्त निर्भर
है रचा जयदेव कवि ने यह प्रबंध पुनीत सुंदर. २.

...

हरि-स्मरण में यदि सरस मन,
यदि विलास - कला - कुतूहल
तो सुनो जयदेव - वाणी
मधुर पद ये कांत कोमल. ३.

...

काव्य रचते पल्लवित कर
उमापतिधर,
द्रुत दुरूह प्रबंध रचकर
श्लाघ्य हैं चिर शरण कविवर,
आदि-रस-कविता-कृती आचार्य गोवर्द्धन न कोई
है प्रतिस्पर्धी कि जिनका और श्रुतिधर सुकवि धोयी,
एक ही जयदेव ऐसे सुकवि पंडित
भारती जिनसे सभी विधि शुद्धि-मंडित. ४.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रथम संदर्भ

दशावतार स्तोत्र

प्रलय - पयोधि - सलिल धर वेद सुपावन,
विहित - वहित्र - चरित मन - भावन,
केशव ! धृत-मीन-शरीर ! जय जगदीश हरे !. १.

क्षिति अति विपुल पृष्ठ पर पूर्ण प्रतिष्ठित,
धरणि - धरण-व्रण - चिह्न सुशोभित,
केशव ! धृत-कच्छप-रूप ! जय जगदीश हरे !. २.

प्रभु ! तव दशन-शिखर पर धरणी स्थित यों
शशि पर मलिन कलंक-कला ज्यों
केशव ! धृत-शूकर-रूप ! जय जगदीश हरे !. ३.

तव कर कमल-प्रांत नख-शृंग मनोहर,
दलित हिरण्य कशिपु तनु-मधुकर,
केशव ! धृत-नरहरि-रूप ! जय जगदीश हरे !. ४.

छल बल-विक्रम से बलि को वर वामन,
पद-नख-नीर जनित जन पावन,
केशव ! धृत-वामन-रूप ! जय जगदीश हरे !. ५.

क्षत्रिय-रुधिर बहा कर जग गत-पाप,
स्नात शुद्ध प्रशमित - भव - ताप,
केशव ! धृत-भृगुपति-रूप ! जय जगदीश हरे !. ६.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वितरित दिशि-दिशि कर दिक्पतियों को वर,
दशमुख मौलि विजय बलि सुंदर,
केशव ! धृत-राम-शरीर ! जय जगदीश हरे !. ७.

वपु पर विशद जलद-सम वसन मनोरम,
हल-हति-भीति मिलित यमुना-सम,
केशव ! धृत-हलधर-रूप ! जय जगदीश हरे !. ८.

निन्दित यज्ञ-विधान सदा श्रुति-सम्मत,
सदय-हृदय दर्शित - पशु - वध - व्रत,
केशव ! धृत-बुद्ध-शरीर ! जय जगदीश हरे !. ९.

म्लेच्छ-निधन कारण धर खड्ग सुशोभन,
धूमकेतु - सम अति कराल तन,
केशव ! धृत-कल्कि-शरीर ! जय जगदीश हरे !. १०.

श्री जयदेव रचित यह गीत मधुर वर,
सुखद शुभद भव सार सुनो नर,
केशव ! धृत-दशविध-रूप ! जय जगदीश हरे !. ११.

...

वेदोद्धारण, पृष्ठ - देश पृथ्वी-संधारण,
दशनों पर धरणी-उत्तोलन, दैत्य-विदारण,
बलि-छलना, क्षत्रिय-कुलक्षय, रावण-रण-मारण,
हल-धारण, कारुण्य-प्रसारण, म्लेच्छ-निवारण —
लीलायें कीं जिसने ऐसी दश आकृति धर
नमो कृष्ण ! तुमको करुणाकर !. ५.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीय संदर्भ

स्तोत्र

श्रित-कमला-कुच-मंडल ! धृत-कुंडल !
कलित-ललित-वन-माल ! जय जय देव हरे !. १.

दिनमणि-मंडल-मंडन ! भव-खंडन !
मुनि-जन-मानस-हंस ! जय जय देव हरे !. २.

कालिय-विषधर-गंजन ! जन-रंजन !
यदुकुल-नलिन-दिनेश ! जय जय देव हरे !. ३.

मधु-मुर-नरक-विनाशन ! गरुड़ासन !
सुरकुल-केलि-निदान ! जय जय देव हरे !. ४.

अमल-कमल-दल-लोचन ! भव-मोचन !
त्रिभुवन-भवन निधान ! जय जय देव हरे !. ५.

जनक-सुता-कृत-भूषण ! जित-दूषण !
समर-शमित-दशकंठ ! जय जय देव हरे !. ६.

अभिनव-जलधर-सुंदर ! धृत-मंदर !
श्री-मुख-चंद्र-चकोर ! जय जय देव हरे !. ७.

तव पद आनत जानो, यह मानो,
सकुशल प्रणत करो, जय जय देव हरे !. ८.

श्री जयदेव रचित यह, मधु-रस-मय,
मंगल-उज्ज्वल-गीत, जय जय देव हरे !. ९.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लक्ष्मी स्तन-कुंकुम रँग
आलिंगन के कारण जिसमें लग
दिखता ऐसा अनुपम
मानो हो फूट पड़ा अंतर-अनुराग स्वयं —
रति-श्रम-जल-कण-झलमल हरि का वर वक्ष देश
पूर्ण करे इष्ट तुम्हारे अशेष. ६.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृतीय संदर्भ

नव वसंत में उन्मन-उन्मन
कानन-कानन
ले वासन्ती कुसुमों-से सुकुमार अंग तन
डोल रहीं करती जो बहुविध कृष्णान्वेषण,
काम-ताप-पीड़ा से आतुर
औ' चिन्ताकुल
राधारानी की बाधा के बढ़ जाने पर
बोली एक सहचरी उनको सरस मनोहर. ७.

. . .

गीत

"ललित लवंग-लता छूकर अति कोमल मलय-समीरण,
मधुकर-गुंजित कोकिल-कूजित कुंज-कुटीर सुशोभन,
हरि विहार-रत इस वसंत में,
नाच युवतियों संग रहे विरही जन हेतु दुरंत में. १.
उन्मद मदन-मनोरथ पथिक-वधू-जन रोदित व्याकुल,
अलिकुल-संकुल कुसुम-भार-नत वकुल वृक्ष-कुल आकुल. २.
मृगमद-गंध-प्रसारण नव दल-युत तमाल तरु झूले,
युवजन-हृदय-विदारण मनसिज-नख-सम किंशुक फूले. ३.
मदन-महीपति-कनक-दंड-सम केशर कुसुम खिले ये,
भ्रमर-युक्त पाटलि प्रसून ज्यों स्मर-तूणीर झिले ये. ४.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लाज-रहित यह जगत् देख तरु तरुण करुण मुसकाये,
विरही-वध हित कुंत केतकी-दंत-प्रपूर्ण दिशायें. ५.

माधविका-परिमल-नव-मल्ली-सुरभित मधु ऋतु आली,
तरुण अकारण बंधु परम मुनि मन भी हरने वाली. ६.

माधविका-परिरंभण-पुलकित मुकुलित आमों का वन,
वृन्दावन-वन-परिसर-विस्तृत यमुना-जल चिर पावन". ७.

श्री जयदेव रचित पद उपजावे हरि-पद-स्मृति अनुपम,
सरस वसंत-समय वन-वर्णन मदन-विकार-मनोरम. ८.

...

"अर्ध-विकच मल्लि-लताओं से हर कर पराग,
प्रकटा पटवास सदृश, महका कानन-विभाग,
अविकल केतकी गंध-बंधु परम
व्याप्त सघन पंचबाण प्राण-उपम
गंधवाह
जला रहा मन को रे आज आह !". ८.

...

"मानो चन्दन-गिरि के कोटर-स्थित
सर्पों के कवल-क्लेश से पीड़ित
मलय पवन
जाता हिमगिरि के प्रति करने हिम-अवगाहन
और स्निग्ध आम्र-मुकुल हेर नवल
होने से हर्ष प्रबल
करते कोकिल-कुल चिर
कुहू कुहू कलोत्ताल-आकुल-गिर्". ९.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"उच्छल मधु-गंध-लुब्ध मधुपों से झकझोरे गये हुए आम्र-मुकुल
उनसे जो खेल रहे पिक-कुल कर
कू-कू स्वर
उपजाते कानों में ताप अतुल,
ऐसे मधुऋतु के दिन
पथिकों से किसी तरह काटे जाते सुकठिन
केवल रे ध्यान-समय
प्राप्त क्षणिक प्राण-प्रिया-संगम-सुख से रसमय". १०.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चतुर्थ संदर्भ

बहु ललनाओं के आलिंगन-वश
नृत्य-मनोहर जो हरि बहु-विलास-रस-लालस
राधा को दिखलाकर सखी दूर से ही अति
बोली यों उनके प्रति. ११.

. . .

गीत

"चंदन-चर्चित नील कलेवर पीत-वसन वनमाली,
केलि-विदोलित कुंडल-मंडित गंड युग स्मित-शाली,
हरि इन मुग्ध वधू जन में,
रहे रम केलिमयी-गण में. १.

पीन पयोधर भार दबा हरि को भुज में रँगराती,
पंचम राग उठाकर एक वधू उनके सँग गाती. २.

लोल विलास-विलोचन से जिसमें मदनोदय आँका,
देख रही अति मुग्ध वधू हरि का मुख-अंबुज बाँका. ३.

बात करूं श्रुति में छल यों मिल कृष्ण कपोल-तटी में,
एक नितंब-वती धरती पुलकों-सह चुंबन धीमे. ४.

केलि-कला-वश खींच रही यमुना वन कूल किनारे,
वंजुल-कुंज गये हरि को पट एक वधू कर धारे. ५.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर-करताल-वलय कर झंकृत ताल मिला सुन वंशी,
रास रही कर जो संग में युवती प्रति कृष्ण प्रशंसी. ६.

बांध इसे फिर चूम उसे फिर और कहीं रम कामी,
देख इसे हंस मंद रहे हरि हो उसके अनुगामी". ७.

श्री जयदेव कथित अति अद्‌भुत केशव रति-रस-लीला,
विपिन-विनोद-कला-युत दे यह मंगल शुभ-यश-शीला. ८.

...

"अनुरंजन से निखिल चित्त में उपजाकर आनंद,
इंदीवर-श्रेणी-सम श्यामल
कोमल निज अंगों से मंगल
रच अनंग-उत्सव रस-रंग अमंद —
अंग-अंग आलिंगित ब्रज सुंदरियों से स्वच्छंद
मूर्त्तिमान् शृंगार सदृश सखि ! मधुऋतु में हैं क्रीड़ित मुग्ध मुकुंद". १२.

...

बहु विभ्रम वाली मतवाली ब्रज-वधुओं के बीच
रासोल्लास भरी प्रेमान्धा राधा जिनको खींच
लगा हृदय में कस कर निर्भर
आलिंगन कर
और उन्हें कह
"साधु ! सुधामय मुख है तव यह"
गीत प्रशंसा छल से उद्‌भट
अधर चूम लेतीं जिनका झट —
मंद मधुर मुसकाते माधव
रक्षक हों तव. १३.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीय सर्ग

अक्लेश केशव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरि साधारण-प्रणय देख पा निज गौरव में बाधा
ईर्ष्यावश जा कहीं दूर वन विहरण करतीं राधा
भ्रमर-पुंज-गुंजित अति सुंदर लता-कुंज आसीना
बोली प्राण-सखी से अपनी निर्जन में हो दीना. १.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पंचम संदभ

गीत

"अधर-सुधा-सुमधुर-ध्वनि-मुखरित मोहन वंशीधर को,
चलित दृगंचल चंचल मौलि-कपोल-वतंस सुघर को,
रास-विलासी अभिलाषी को,
मन गुनता हरि परिहासी को. १.

चंद्रक-चारु मयूर मनोहर पंख रचित केशी को,
अविकल इंद्र-धनुष-अनुरंजित मेघ-जटा-वेशी को. २.

गोप कदंब नितंब-वती मुख चुंबन रस लोभी को,
बंधुजीव-सम अधर मनोरम पल्लव-स्मित-शोभी को. ३.

विपुल पुलक भुज निहित किये जो शत-शत व्रज नारी को,
कर-पद-उर-मणि-भूषण-किरणों से तमिस्र-हारी को. ४.

जलद-पटल गत इंदु-विनिंदक चंदन तिलक कली को,
पीन पयोधर मर्दन-निर्दय हृदय-कबाट-स्थली को. ५.

मणिमय मकर मनोहर कुंडल-मंडित गंड सुघर को,
अनुगत बहु मुनि-मनुज-सुरासुर-परिजन पीतांबर को. ६.

विशद कदंब तले समुपस्थित कलि-मल-भय-शामी को,
मन-मन काम नयन से मुझसे भी रमते कामी को". ७.

श्री जयदेव रचित अति सुंदर मोहन मधुरिपु झांकी,
हरि-पद-स्मृति प्रति पुण्यवान् जन हेतु मधुर यह आंकी. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"सोचता उनके सदा गुणग्राम,
क्रोध से भ्रमवश नहीं भी काम,
धारता परितोष,
दूर तजता सकल उनके दोष—
छोड़ मुझको युवतियों के संग अधिक सतृष्ण
कर रहे क्रीड़ा मधुर जो कृष्ण
ले रहा है काम
क्या करूं मैं हा ! उन्हीं की ओर मन को वाम". २.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षष्ठ संदर्भ

गीत

"निशि में निर्जन कुंज-गता से मोहन अभिसारी को,
चकित विलोकित सकल दिशा रति-रस-वश हस धारी को,
सखि री ! केशि-मथन को लाकर,
मदन-मनोरथ-रस-विकला से रमित कराओ सत्वर. १.

प्रथम समागम-लजिता से पटु चाटु वचन-कारी को,
स्मित-युत भाषण-रचिता से श्लथ जघन-वसन-हारी को. २.

किसलय-शयन-सुशयिता से मम हृदय-सुचिर-शायी को,
भुज भर चुंबन दयिता से भुज बांध अधर-पायी को. ३.

अलस निमीलित-नयना से पुलकित कपोल-वाले को,
श्रम-जल-मय तनु-अयना से वर मदन दोल-वाले को. ४.

कोकिल-कलरव-वचना से जित-मदन-तंत्र विषयी को,
शिथिल कुसुम कच-रचना से नख-लिखित वक्ष प्रणयी को. ५.

मणि-रव-नूपुर-चरणा से परिपूरित रति-मानी को,
मुखर-विश्रृंखल-रशना से कच धर चुंबन-दानी को. ६.

रति-सुख-रस-वश अलसा से नव कमल-नयन शोभी को,
असह पतित तनु-कलशा से अति मुदित मदन लोभी को". ७.

श्री जयदेव रचित यह अतिशय मधुरिपु-निधुवन-लीला,
सुख उत्कंठित गोपवधू मुख-वचन सुमंगल-शीला. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"स्रस्त हुआ है जिनके हस्त से विलाश वंश,
लगे जिन्हें वंकिम-भ्रू गोपिका-कटाक्ष-दंश,
जिनका वर गंड देश
स्वेद से भरा अशेष,
देख मुझे लज्जित जो,
हास-सुधा से करते आनन निज सज्जित जो —
ब्रज वधुओं से वृत ऐसे हरि को कानन में
दर्शित कर हर्षित हो आज रही मैं मन में". ३.

. . .

"देखी जाती न स्तवक-युक्त भी अशोक लता;
देता है हाय सरोवर-उपवन-पवन व्यथा;
गूंज रहे हैं जिन पर चपल भृंग
आमों के मुकुल शृंग
करते हैं नहीं सुखी
सखि ! सुमुखी !. ४.

. . .

भाव भरा मंद हास,
खुल-खुल पड़ता अविरल केश पाश,
उल्लासित भ्रू लतिका,
छल-दर्शित बाहु मूल, अर्ध-प्रकट वक्ष-शिखा,
ब्रज वधुओं के लखकर निर्जन में
जाने को उत्सुक चिर मुग्ध मनोहर मन में —
ऐसे जो केशव नव
हरें क्लेश सब रे तव. ५.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृतीय सर्ग

मुग्ध मधुसूदन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कंसासुर-अरि ने भी —
हरि ने भी —
विश्व-वासना के वर बंधन-शृंखल सदृशा
प्राण-प्रिया
राधा को हृदय बसा
बहु ब्रज-सुंदरियों को त्याग दिया. १.

. . .

इतस्ततः
राधा को ढूंढ स्वतः
स्मर-शर-हत खिन्न हृदय
करते अनुताप निश्चय
यमुना-तट-अंत-कुंज में जा हो समासीन
माधव करने लगे विषाद दीन. २.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सप्तम संदर्भ

गीत

"वह गई जब लौट वधुओं सँग मुझे अवलोक,
सापराध न मैं सका भय से उसे तब रोक,
रुष्ट होकर वह गई रे हा ! हतादर हो. १.

कर रही क्या कह रही होगी विरह में हाय !
क्या प्रयोजन भला धन-जन-जन्म-गृह से हाय !. २.

स्मरण करता हूं वदन वह कोप-युत भ्रू-भंग,
कोकनद ज्यों रक्त आकुल भ्रमित भौरों संग. ३.

मैं उसे लेकर हृदय में रमित हूं चिर आप,
ढूंढ़ता क्यों फिर उसे वन में वृथा सविलाप ?. ४.

तन्वि ! ईर्ष्या-वश हृदय तव खिन्न है, यह ज्ञात,
किंतु तुम हो कहां ? कैसे करूं अनुनय-बात ?. ५.

सामने आ जा रही सी लग रहीं तुम प्राण !
किंतु आलिंगन न सचकित कर रहीं क्यों दान ?. ६.

क्षमो मुझको और यों होगा नहीं अपराध,
सुमुखि-दर्शन दो, मुझे यह काम-क्लेश अबाध". ७.

सुकवि श्री जयदेव कृत यह हरि-विरह-रस-छंद,
केन्दुबिल्व - समुद्र - संभव - चंद्र - रचित अमंद. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"पद्म-लता का हार हृदय में—यह रे नहीं भुजंग !
यह नीलोत्पल-माल कंठ में—यह न गरल का रंग !
यह चंदन-रज नहीं—भस्म, मैं प्रिया-रहित निर्दोष
हर-भ्रम में मारो न मुझे, दौड़ो क्यों काम सरोष ?". ३.

. . .

"आम्र-मुकुल-शर कर धर
यों न चढ़ाओ धनु पर,
क्रीड़ा से ही जिसने जीत लिया जग उसका
मूर्च्छित को आहत करने में है पौरुष क्या ?
उसी मृगी-नयनी के
बहु तीखे
काम-चल-कटाक्ष-वाण से जो यह जर्जर मन
थोड़ा भी हुआ स्वस्थ अभी तक न". ४.

. . .

"भ्रू-पल्लव—धनु प्रमाण,
शत-तरंग-युत अपांग—तीक्ष्ण वाण,
श्रवण प्रान्त—सुंदर ज्या,
स्मर ने क्या
जगत् जीत चुके हुए ये समस्त
प्रखर अस्त्र
राधा में न्यस्त किये ?
काम-विजय-जंगम-वर-दैवत को सौंप दिये ?". ५.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"सखि ! तव भ्रू-चाप निहित
दे कटाक्ष-वाण विहित
मर्म-व्यथा,
श्याम-वर्ण कुटिल परम
कवरी वध का उद्यम
करे तथा
बिंबाधर रागवान्
करे मोह का विधान
तन्वि ! अहो !
पर स्तन सद्वृत्त कि जो
प्राणों से करते क्यों
खेल कहो ?". ६.

. . .

"वही स्पर्श-सुख, वही स्निग्ध चिर चंचल नेत्र-विलास,
वही मुखाम्बुज-वास,
वही अमृत-स्यंदी वाक्-चातुरी,
बिंबाधर-माधुरी,
उसके ही बहु-विषय-संग-रत मन यह लग्न-समाधि—
फिर कैसे बढ़ती ही जाती हाय ! विरह की व्याधि ?". ७.

. . .

ग्रीवा कुछ वक्र किये
हिला रहे शिर जो निज हिलते अवतंस लिये
मुग्ध-चित्त श्री मधुसूदन की मृदु-मृदु बढ़ती
राधा के सुंदर अति चंद्रवदन में पड़ती
शत कटाक्ष की लहरें—
लक्षित जो हैं न लक्ष ललनाओं से वैसे
वंशी-स्वर-उद्गम-स्थल में मन के रहने से—
मंगल संचार करें. ८.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चतुर्थ सर्ग

स्निग्ध मधुसूदन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यमुना-तट वेतस-निकुंज में बैठे प्रेमोद्भ्रांत
माधव को यों सखी राधिका की बोली वृत्तांत—. १.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अष्टम संदर्भ

गीत

"निंदित चंदन-इंदु-किरण, अति दुःख-अधीर सखी मम,
व्याल-निलय तज आगत मलय-समीरण तीव्र गरल-सम,
तव वियोग में दीना,
माधव ! मनसिज-शर-भय से वह चिंतन में तव लीना. १.
अविरल निपतित मदन-शरों से करने को तव रक्षण,
हृदय-मर्म पर वर्म-सदृश धरती नलिनी-दल-छादन. २.
कुसुम-विलास-शयन वर को वह कर मनसिज-शर-शय्या,
तव परिरंभण-सुख हित करती है मानों व्रतचर्या. ३.
झर-झर अविरत लोचन-जलधर आनन-अंबुज सारा,
राहु-विकटतर-दंत-दलित-शशि-गलित अमृत-रस-धारा. ४.
निर्जन में लिखती मृग-मद से तव वर मदन-कलेवर,
होती प्रणमित मकर बना नीचे कर आम्र-मुकुल-शर. ५.
प्रतिक्षण यों कहती "माधव ! तव पदतल प्रणत पड़ी मैं,
तुम यदि विमुख हुए कि सुधानिधि से भी यहां जली मैं". ६.
कभी ध्यान-लय में कल्पित कर दुर्लभ तुम सम्मुख में,
विलपित, हसित, विषण्ण, रुदित, धावित हो मिलती सुख में". ७.
श्री जयदेव-रचित यह सुंदर मन में यदि रखना स्थिर,
हरि-विरहाकुल गोप-युवति-दूती का वचन पढ़ो चिर. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"घर ही मानों विपिन भयंकर, प्रिय सखियों की माल जाल है,
श्वास-पवन ही तप्त निरंतर, दावानल की प्रखर ज्वाल है,
वह वियोग में हाय ! तुम्हारे, हरिणी - सीदयनीय बनी है,
डोल रहा शार्दूल-सदृश ही, निर्दय अति कंदर्प-काल है." २.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवम संदर्भ

गीत

"स्तन पर लंबित भी जो हार,
मान रही कृश तनु पर भार,
राधिका तव वियोग में केशव !. १.

सरस मसृण तन - चंदन - पंक,
देख रही विष-सदृश सशंक. २.

श्वास - पवन - अति - प्रबल - प्रवाह,
मदन-अनल - सम ज्वलित सदाह. ३.

दिशि-दिशि झर-झर जल-कण-जाल,
नयन-नलिन-युग ज्यों कि अनाल. ४.

देख रही भी किसलय - सेज,
मान रही है पावक - तेज. ५.

करतल से तजती न कपोल,
सांध्य-बाल-शशि ज्यों कि अलोल. ६.

"हरि" "हरि" ही जपती बस नाम,
विरह-विहित कह मरण निकाम." ७.

श्री जयदेव - रचित यह गीत,
सुखी करे हरि - पद - उपनीत. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"रोमांचित होती, करती सीत्कार,
रोती कर चीत्कार,
कभी कांप उठती, फिर होती श्रांत
कभी ध्यान करती, होती उद्‌भ्रांत,
सो जाती फिर हाय !
गिर जाती, उठती, फिर मूर्छित होती है असहाय—
ऐसा है उस वर युवती का प्रबल काम-ज्वर-रोग,
किंतु न क्या वह बच जायेगी पा तव रस का योग
हे स्वर्-वैद्य-प्रतिम ! यदि होओ तुम जो कहीं प्रसन्न ?
और कहीं जो छोड़ दिया तो कौन भला फिर अन्य !." ३.

. . .

"स्वर्ग-वैद्य प्रिय अविकृत !
केवल तव अंग-संग-स्पर्श-अमृत—
द्वारा ही साध्य सदा जो विधुरा
स्मरातुरा
राधा यह—
तुमसे यदि हुई नहीं कहीं मुक्त-बाधा यह
तो समझो हे अकरुण !
इन्द्र-वज्र से भी हो तुम दारुण." ४.

. . .

"काम-रोग-रुग्णा का अतिशय यह आश्चर्य महान्
चंदन-शशि-कमलिनी-सोच में मन हो जाता म्लान !
किंतु क्षमावश शीतल तुमको निर्जन में कर ध्यान
किसी तरह वह क्षीणा क्षण भर धारण करती प्राण." ५.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"होती थी खिन्न न सह
पहले जो नयन-निमिष-काल मात्र क्षणिक विरह
देख प्रथम-आम्र-मुकुल चिर वियोग में अब वह
जीती है किसी तरह." ६.

. . .

वृष्टि-विकल गोकुल-भू-रक्षण-संकल्प-सहित
उद्धृत कर धर गिरि-गोवर्द्धन को दर्प-सहित
हर्ष-विचल व्रज-वनिता-गण से चिर चुंबित जो
अधर-लगे-सुंदर-सिंदूर-रंग-अंकित जो
कंस-वैरि-गोप-तनय-बाहु सबल
तुमको दे श्रेय सकल. ७.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पंचम सर्ग

साकांक्ष पुण्डरीकाक्ष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"मैं यहां हूं, तुम त्वरित जाओ
राधिका को विनय मेरी सुना ले आओ"
इस तरह हरि से नियुक्ता सखी जा सानंद
राधिका को मधुर बोली छंद—. १.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दशम संदर्भ

गीत

"चलित मलय - समीरण मदन लिये साथ,
कुसुम-निकर खिलते विरहि-हृदय - दलनार्थ,
सखि ! तव विरह में पीड़ित वनमाली. १.

जल कर शशि-करों में वे हैं मृत - प्राय,
पतित मदन-शर पा विलपित विकलतर हाय !. २.

ध्वनित मधुप - सभा में देते श्रुति रोक,
विरह - विकल मन में प्रति निशि धरते शोक. ३.

वन - लता - कुंज बसते तज सुललित धाम,
धरणि - शयन लुटते रट - रट तव नाम. ४.

सुन कर पिक कुहु - कुहू दौड़ अति अधीर,
जब जनगण हंसते कहते "न विरह-पीर." ५.

मधुर सुन खग - वाणी स्मरण कर तव बोल,
तव रति - सुख - गरिमा - गुण गिनते सब अतोल. ६.

वे नाम मास राधा सुनते अति सराग,
जप सरस उसे करते पर - युवति प्रति न राग." ७.

रचित कवि जयदेव यह विरह - मधुर - छंद,
सरस उर प्रकटें हरि सुकृत से सानंद. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"संग तुम्हारे पहले कभी
रतिपति-सिद्धियां सकल पूरी थीं हुई जहां इष्ट
माधव फिर अभी
उसी मदन-महातीर्थ-केलि-कुंज में हो उपविष्ट
केवल तव ध्यान-निरत
जपते आलाप-मंत्र तव अविरत,
चाह रहे हैं वहुधा
केवल तव वक्ष-कुंभ-निर्भर-परिरंभ-सुधा". २.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग्यारहवां संदर्भ

गीत

"रति-सुख-सम्मत अभिसर में गत मदन-सुवेश-मनोहर
अब न नितंबिनि ! गमन-विलंबिनि हो, पाओ हृदयेश्वर.

धीर - समीरण यमुना - तट - वन राज रहे वनमाली,
पीन - पयोधर - परिसर - मर्दन - चंचल - कर - युग - शाली. १.

नामांकित कर स्थल इंगित कर बजा रहे मृदु वंशी,
बहुत समझते पवन चलित वे पा रज तव - तन - स्पर्शी. २.

विहग उड़ा यदि, पत्र झड़ा यदि, शंकित हो तुम आयीं,
विरच शयन वे चकित नयन से होते तव-पथ-ध्यायी. ३.

मुखर मधुर जो तज नूपुर दो रति के शत्रु भयंकर,
चलो कुंज प्रति तिमिर-पुंज अति नील-निचोल पहन कर. ४.

हरि के उर पर हार कि जिस पर घन में ज्यों वक झलसें,
तरल-तड़ित-सम राजित हो तुम गौरि ! सुकृत के फल से. ५.

स्खलित-वसन जो गलित-रसन जो धर दो सघन जघन को,
पत्र - शयन में पंकज - नयने ! हर्ष - निधान रतन को. ६.

हरि अति मानी, रजनि सुहानी बीत चली यह लो री,
वचन मान मम, कर दो सखि ! तुम हरि अभिलाषा पूरी." ७.

श्री जयदेवी हरि - पद - सेवी रचना परम मनोरम,
मुदित हृदय जो सुखद सदय जो सुकृत सुषम हरि को नम. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"बार बार छोड़ छोड़ श्वास रेख,
बार बार सम्मुख पथ देख देख,
बार बार जा-जा कर लता-कुंज के भीतर,
बार बार मन में गुनगुना दुखी हो हो कर,
शय्या रच बार वार,
बार बार आकुल हो पथ निहार—
स्मर-शर-आघात-क्लांत
कांते ! तव प्रिय यों अतिशय अशांत." ३.

. . .

"तव प्रतिकूलता सहित देखो यह सूर्य गया डूब,
हरि की इच्छा सह यह तिमिर हुआ सान्द्र,
कोकों के करुण स्वन समान दीर्घ मग अभ्यर्थना,
सुंदर अभिसार-समय मुग्धे ! है यह विलंब वृथा." ४.

. . .

"आलिंगन, चुंबन, नख-लेखन, कामोद्भव, उन्माद,
संभ्रम, रति-आरंभ समाकुल एक एक के बाद—
एक अन्य को अंधकार में करते अनुसंधान
अकस्मात् मिल, संभाषण से ही केवल पहचान,
दंपति पा ये सब निर्जन में अनुप्रीत साकार
प्राप्त न करते लज्जा-मिश्रित कौन कौन रस-सार ?." ५.

. . .

"अंधकार-मय पथ में सभय चकित दृष्टि डाल
रुक रुक प्रति तरुतल, मृदु मंद बढ़ा पद संभाल,
प्रेम-रस-तरंग-वेश,
अंगों से पहुंची जो किसी तरह विजन देश
देख तुम्हें सुमुखि ! सार्थ
मानेंगे हरि अपने को कृतार्थ." ६.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधा के मुग्ध वर मुखारविन्द के मधुकर,
त्रिभुवन की मौलि-स्थली-इन्द्रनील-मणि सुंदर,
अवनी-भारावतार-क्षम अदोष,
व्रज-वनिता-मनस्तोष-कर प्रदोष,
कंसासुर-ध्वंस-हेतु
धूम-केतु—
करें तुम्हारा रक्षण
सदा देवकीनंदन. ७.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धृष्ट वैकुण्ठ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चिर अनुरक्ता
लख उसको पर गमन-अशक्ता
जा लतिका-गृह सखी फिर त्वरित्
बोली काम-विकल हरि को उसका सब चरित—. १.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बारहवां संदर्भ

गीत

"दिशि - दिशि बस तुम ही दिख पड़ते
पान अधर - मधु उसका करते
हरि ! विषाद-रत राधा निज गृह में. १.

तव अभिसार हेतु कुछ चलती,
दो पद ही चलकर गिर पड़ती. २.

पंकज - किसलय - वलय पहनती,
तव रति - हित बस जीवन धरती. ३.

धर तव वेश निरखती लीला,
"मैं हरि हूं" यों भावन शीला. ४.

"त्वरित् न क्यों आये हरि ?" अस्थिर,
पूछ रही सजनी को फिर फिर. ५.

भुज भर चूम रही वह तम को,
कृष्ण समझ उस जलधर-सम को. ६.

तव विलंब से विगलित - लज्जा,
सिसक विलपती वासक-सज्जा." ७.

श्री जयदेव - रचित रस - समुदय
दे मुद रसिक जनों को अतिशय. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"विपुल-पुलक-आकुल हो
अविरल सीत्कार सहित
अंतर-जड़ता-वश जो काकु-स्वरोच्चार-सहित
रोती चिर व्याकुल हो,
हरिणी-सी नेत्रवती
कितव ! तुम्हारी ही बस संगम-चिंता करती—
सदा ध्यान-लग्ना वह
प्रेम-जलधि-मग्ना वह." २.

...

"अंगों को करती वह बहुशः है समलंकृत,
पत्र हिला भी तो तुम आये यों हो शंकित,
रचती वह शय्या है फिर फिर,
बैठी ध्यान लगाती है चिर,
यों सज्जा-शंका-शय्या-विरचन-लग्ना भी,
शत-संकल्प-क्रिया-मग्ना भी—
वह वर-देहा
बिता सकेगी बिना तुम्हारे रात न रे हा !." ३.

...

"कर रहे विश्राम तुम यों
कृष्ण-भोगी-भवन में भांडीर-तरुतल में भला क्यों ?
भ्रात ! जाओ नन्द-गृह आनंद-दायी
क्या यहां से है नहीं पड़ता दिखायी ?"
पटु रचन ये—
गूढ़ राधा के वचन ये—
सांध्य-कालिक अतिथि द्वारा नंद-सन्निधि-कथित निर्भय
हरि-प्रशस्ति-भरी गिरा की हो सदा जय." ४.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सप्तम सर्ग

नागर नारायण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब इसके बाद सुघर इंदु
जो दिक्-सुंदरी-वदन-चंदन की विंदु
कुलटा-कुल-पथ-च्युति से
जात हुए पातक से लांछित ज्यों कांत
अपनी नव-अंशु-जाल की द्युति से
दीपित कर उदित हुआ वृन्दावन-प्रांत. १.

. . .

उधर चंद्र का बिंब प्रसारित,
हरि का इधर विलंब अवारित,
रचकर विविध विलाप
लगी उच्च स्वर में करने वह विधुरा यों परिताप—. २.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेरहवां संदर्भ

गीत

"हरि न वन में मिले कथित इस समय भी,
विफल रे अमल ये रूप-यौवन सभी,
शरण जाऊं कहां सखी-जन-वचन-वंचिता ? १.
प्राप्त करने जिसे वन फिरी निशि समय
काम-शर-हत हुआ हा ! उसी से हृदय. २.
मरण मेरा भला, व्यर्थ यह तन गहूं,
विरह का अनल कैसे अचेतन सहूं ? ३.
विकल हा ! कर रही मधुर मधु-यामिनी,
कौन हरि को लिये सुकृतिनी कामिनी. ४.
सोचती हूं वलय-रत्न-भूषण सभी
हरि विरह अनल में आज दूषण सभी. ५.
कुसुम सुकुमार तनु को विषम छेदता,
हृदय का हार बन काम-शर बेधता. ६.
मैं इसे मान कर तुच्छ वन-बेत में,
हरि न करते स्मरण भी मुझे चेत में." ७.
हरि-चरण-शरण जयदेव कवि भारती
बसे उर युवति-सी कोमल कलावती. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"तब क्या रे ! आज विरत
किसी कामिनी के प्रति हरि हैं असार-निरत,
अथवा मित्रों-सह हो क्रीड़ा-रत गये अटक,
अथवा इस सांधकार वन में वे रहे भटक,
अथवा चिर क्लांत-मना
होने से दो पद भी हाय ! कठिन है चलना—
जो कि उन्हीं के द्वारा संकेतित रम्य सघन
वंजुल-लतिका-निकुंज में आये अभी तक न ?." ३.

. .

देख सखी लौटी बिन माधव के विषाद से मूक
शंकित जो हरि रमित अन्य सँग
मानों उसने देखा वह प्रत्यक्ष रागरँग
उठी राधिका कूक—. ४.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौदहवां संदर्भ

गीत

"स्मर-समरोचित-रुचिर-वेशिनी
दलित-कुसुम-दर-लुलित-केशिनी
हरि सँग आज विलसती कोई युवती अधिकगुणा. १.
हरि-परिरंभण-भाव खिल रहे,
कुच-कलशों पर हार हिल रहे. २.
चंद्र-वदन पर अलक ललकते,
अधर पिये वह, नयन झपकते. ३.
चंचल-कुंडल-युत-कपोल हैं,
रसन मुखर अति जघन लोल हैं. ४.
प्रिय को लख लज्जा से हँसती,
बहु स्वर करती रति-रस रसती. ५.
पुलकित कंपित-अंग सिहरती,
सासें ले दृग मूंद विहरती. ६.
श्रम-जल-कण-मय-सुभग-शरीरा,
हरि-उर सोई रति-रण-धीरा." ७.
श्री जयदेव कथित हरि-क्रीड़ा,
शमित करे कलि-कल्मष-लीला. ८.

...

"विरह-हेतु पांडुर जो हरि का वर मुख-सरोज
उस-सा दिखता विधु यह करता जन-दुःख दूर
किंतु सुहृदये ! मनोज
मेरे उर को करता व्यथा-पूर." ५.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पंद्रहवां संदर्भ

गीत

"उदित-मदन में रमणि-वदन में अधर चुंब-हित बढ़ा
लिखते सपुलक मृग-मद-पत्रक शशि में ज्यों मृग कढ़ा
रमते यमुना-पुलिन-विपिन में विजयी हरि अधुना. १.

रतिपति-मृग-वन मेघ-चिकुर-घन मुख पर सुंदर लसे,
उसमें कुरवक चपला के स्रक् रखते हरि स्नेह से. २.

नख-क्षत-शशि-युत मृग-मद-चित्रित उर को अंबर कहो,
मणि-मय हारक मानों तारक धरते उसमें अहो !. ३.

भुज मृणाल वर मृदु हिम-शीतल करतल नलिनी जहां,
मरकत-कंकण मानों अलिगण पहनाते हरि वहां. ४.

रति-गृह-शोभन मनसिज-आसन जघन बढ़ाते स्पृहा,
उनमें सुंदर मणि-रसना-वर-तोरण धरते अहा !. ५.

पद किसलय में कमलालय में नख-मणि से जो ढके,
रचते अलता वाह्य सुघरता उर पर अपने रखे. ६.

रमते ऐसे हाय ! किसी से हलधर सोदर अहो !
विफल रहूं क्यों विरस वृथा यों वन में सजनी ! कहो ?". ७.

हरि-पद-सेवक कवि जयदेवक गुंजन हरि-रस-स्रवी,
कलि-युग-माया कल्मष-छाया पड़े न उन पर कभी. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"यदि न निठुर वे शठ आये तो
सखि ! क्यों दुख आक्रोश तुम्हारा ?
बहुवल्लभ स्वच्छंद रमे यदि
कहीं, भला क्या दोष तुम्हारा ?
देखो आज उन्हीं से मिलने
अति उत्कंठित और विकलतर
उनके ही गुण से आकर्षित
हृदय जा रहा स्वयं निकलकर". ६.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोलहवां संदर्भ

गीत

"अनिल - सचल - राजीव - नयन से
तपित न वह नव - पत्र - शयन से
सखि ! जो रमिता वनमाली से. १.
विकसित - सरसिज - सुंदर - मुख से
व्यथित न वह मनसिज - शर - दुख से
सखि ! जो रमिता वनमाली से. २.
अमृत - मधुर - मृदु - मंद - वचन से
ज्वलित न वह मृदु मलय - पवन से
सखि ! जो रमिता वनमाली से. ३.
स्थल - जलरुह - सम - पाणि - चरण से
लुठित न वह हिम - चंद्र - किरण से
सखि ! जो रमिता वनमाली से. ४.
सजल - जलद - अविकल - शीतल से
ज्वलित न उर चिर विरह - अनल से
सखि ! जो रमिता वनमाली से. ५.
निकष - कनक - सम - रुचिर - वसन से
आह न भरती लोक हसन से
सखि ! जो रमिता वनमाली से. ६.
सकल - भुवन - जन - श्रेष्ठ - तरुण से
त्रसित न वह दुख अति अकरुण से
सखि ! जो रमिता वनमाली से". ७.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री जयदेव - रचित इस पद से
हरि भी आकर उर में विलसें
सखि ! जो रमिता वनमाली से. ८.

...

"हे अनंग-आनंदन-कारण ! चंदन-अनिल उदार !
हो प्रसन्न दक्षिण, विरोध मेरा तुम त्याग करो.
जगत्-प्राण ! माधव को केवल क्षण भर के ही लिये
सम्मुख में मेरे लाकर फिर मेरे प्राण हरो." ७.

...

"सखियों का सहवास शत्रु-सा,
शीतल मृदुल समीर अनल-सा,
जिसके मन में आ जाने पर
सुखद सुधाकर
बन जाता है चिर दुखदायी तीव्र गरल सा—
हाय उसी निर्दय के प्रति ही
बार बार उर खिंच खिंच जाता,
कमल-दृशाओं के हित ऐसा
अतनु निरंकुश वाम प्रबल-सा." ८.

...

"मलयानिल ! बाधा दान करो,
हे पंचबाण ! तुम प्राण हरो,
लौटूंगी घर को और नहीं
तन त्याग करूंगी आज यहीं,
यम-भगिनि ! कहो क्यों मुझे क्षमो ?
लो डुबा तरंगों में मुझको, यह दाह शमो." ९.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रात नील निचोल अच्युत के हृदय पर
और राधा-देह पर वर पीत-अंबर
देख विस्मित खिलखिलातीं जब निखिल सखियां अश्रृंखल—
लाज-चंचल
नयन-अंचल
ढाल राधा के वदन पर
मंद मृदु मुसका रहे जो नंद-नंदन
करें जग-आनंद-वर्धन १०.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अष्टम सर्ग

विलक्ष लक्ष्मीपति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

किसी तरह रात बिता
स्मर-शर से जर्जरिता
प्रात समय
प्रिय को—जो सम्मुख में आ नत करने अनुनय—
ईर्ष्या से भर थनथन
बोली यों रोष-वचन—. १.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सत्रहवां संदर्भ

गीत

"निशि भर जगते रहने से तव रक्तिम अलसित लोचन,
मानों स्फुट अनुराग हुआ हो उर का रस-उन्मोचन
जाओ हरि! हरि! माधव! केशव! कपट वचन मत बोलो
हे सरसिज-दृग! जो तव दुख हरती उसके संग हो लो. १.
कज्जल-मलिन नयन को चुंबन देने से यों नीला,
अरुण अधर तव कृष्ण! हुआ तन के अनुरूप रसीला. २.
वपु में स्मर-संग्राम-काल की उभरी नख-क्षत-रेखा,
मरकत-मणि पर लिखित स्वर्ण-लिपि में ज्यों रति-जय-लेखा. ३.
कमल-चरण-झरती-अलता से रंजित सिक्त हृदय यों,
दिखता मदन-महाद्रुम में फूटे नव किशलय हों ज्यों. ४.
दशन-चिन्ह तव अधर-देश में देता मम-उर-पीड़ा,
बतलाता अब भी तव तन मम तन में भेद न थोड़ा. ५.
बाहर से तुम मलिन कृष्ण! मन से भी हो तुम वैसे,
ऐसा यदि न मदन-शर-ज्वर-पीड़ित को छलते कैसे ?. ६.
फिरते तुम वन में अबला-वध-हित, इसमें विस्मय क्या ?
पूतनिका-वध-निर्दय-बाल-चरित्र प्रमाण न है क्या ?." ७.
श्री जयदेव-रचित रति-वंचित-खंडित-आकुल-वाणी
सुनो सुरालय में भी दुर्लभ सुधा-मधुर-रस ज्ञानी. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"मानों अनुराग निकल बाहर है फूट रहा—
देख तुम्हारा यह उर
प्रिया-चरण-अलता से रंगा प्रचुर
अरुण-द्योत है जिससे छूट रहा,
होने से ख्यात प्रणय के मेरे भंग आज
होती है कहीं शोक से बढ़ कर धूर्त्त ! लाज." २.

. . .

अंतर-मोहन, शिर-घूर्णन-विचलन,
कुंतल-मंदार-स्खलन,
स्तब्ध-चित्त-आकर्षण,
दृष्टि-विनोदन-हर्षण-
कारक वर महामंत्र
मृग-नयनी ब्रज-बधुओं का स्वतंत्र,
दृप्त-असुर-कुल-पीड़ित देवों का दुःख-विपद्-
भंजक साकार सतत—
ऐसा कंसारि कृष्ण का जो वंशी का रव
हरे अमंगल सब तव. ३.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवम सर्ग

मुरध मुकुन्द

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब उस मन्मथ-खिन्ना को
रति-रस-भिन्ना को
हरि-सुचरित-चिन्ता-भरिता को
बोली सखी विजन में व्यथिता कलहान्तरिता को—. १.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अठारहवां संदर्भ

गीत

"हरि अभिसारित मृदुल पवन में
सखि ! सुख क्या कह और भवन में ?
माधव से मान करो मत मानमये !. १.

ताल अपेक्षा कठिन सरस ये
विफल करो क्यों वक्ष-कलश ये ?. २.

बार बार न कहा है कितना
हरि न तजो जो सुंदर इतना ?. ३.

क्यों विषण्ण रोती मनमारी ?
हंसती युवति-सभा तव सारी. ४.

सजल-नलिन-दल-रचित-शयन में
सफल करो हरि देख नयन में. ५.

मन में तुम क्यों खेद करो यों ?
वचन सुनो मम विरह हरो यों. ६.

हरि आवें बोलें मधु स्वर री
हृदय करो क्यों व्यर्थ विधुर री ?". ७.

श्री जयदेव-रचित हरि-लीला
रसिक जनों को हो सुख-शीला. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"स्नेही के प्रति तुम जो निष्ठुर,
प्रणमित के प्रति अचल अनातुर,
प्रेमी के प्रति द्वेष लिये जो,
उन्मुख के प्रति विमुख प्रिये ! जो—
इसीलिये विपरीत-आचरिणि ! चंदन-चर्चा तुमको विष है,
चंद्र सूर्य है, हिम पावक है, क्रीड़ा-मुद यातना सदृश है." २.

...

आनंदित जो कि अमित
इंद्र आदि देव गणों से होने से प्रणमित
उनके आनम्र-मुकुट-इंद्रनील-मणियों से
शोभित जो मानों हों घिरे हुए अलियों से,
झर-झर मृदु सुंदर मकरंद-सदृश
जिनको मंदाकिनी सदा करती स्निग्ध सरस—
ऐसे गोविंद के पदारविंद
अशुभ-विनाशन हित बंदूं अनिंद्य. ३.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दशम सर्ग

मुग्ध माधव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब इसके बाद शिथिल रोष हुआ है जिसका,
अविरल निःश्वासों से म्लान मुख-सरोज हुआ है जिसका,
देख रही सखी ओर जो सलाज
सुमुखी के पहुंच पास
सान्ध्य-समय
हर्ष-विशद गद्‌गद्‌-पद बोले हरि यों रसमय—. १.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्नीसवां संदर्भ

गीत

"बोल दो अल्प जो दंत - ज्योत्स्ना हरे
हृदय का भय - तिमिर भीषण,
अधर - रस - पान को प्रेरता चंद्रमुख
ये चकोरों - सदृश लोचन.
प्रिये ! चारुशीले ! तजो यह मान अकारण,
मदन का अनल कर दग्ध मन को रहा
दो मुख - कमल - मधु पावन. १.

सत्य यदि यह सखी ! कुपित हो तुम कहीं,
करो खर - नखर - शर - वर्षण,
बाहु से बांध लो, दांत से काट लो,
करो जिसमें कि सुख - हर्षण. २.

तुम्हीं भूषण प्रिये ! तुम्हीं जीवन प्रिये !
तुम्हीं भव-जलनिधि - रत्न - सम.
सर्वदा तुम रहो परम अनुरागिणी
हृदय करता वही उद्यम. ३.

नील-नलिनाभ-सम तन्वि ! तव ये नयन
बन गये कोकनद दुःसह,
अतनु-शर मार यदि रँग सको कृष्ण को
तो दृगों के अनुरूप वह. ४.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उभय स्तन - कुंभ पर हिले मणि - मंजरी
सजा कर तव हृदय - अंचल,
मदन - आदेश रशना सुघोषित करे
सजा तव घन - जघन - मंडल. ५.
स्थल - कमल - से सुषम हृदय - रंजक परम
सुखद रति - रंगमय लोभन,
तुम कहो तो करूं चरणद्वय में भरूं
सरस अलता परम शोभन. ६.
स्मर - गरल को हरें शिर - विभूषण बने
दो मुझे ये चरण - पल्लव,
मदन - दारुण - अनल है जलाता मुझे
हरें तज्जनित सब विप्लव." ७.
चटुल ये चाटु - पटु - चारु - मुर - वैरि के
राधिका प्रति वचन सुंदर,
जयति पद्मावती - रमण जयदेव - कवि-
भारती स्नेह - रस - निर्झर. ८.

...

"करो न आतंकित यों,
हो न वृथा शंकित यों,
व्याप्त प्रचुर
विपुल जघन-स्तन-वाली ! तुमसे ही तो यह उर,
किसी और
के हित किंचित् उसमें नहीं ठौर,
छोड़ अतनु को ऐसा कौन अन्य
अंतर में कर सका प्रवेश धन्य ?
अतः सृजो
प्रणयिनि ! परिरंभण-प्रारंभ-काल उचित कि जो." २.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"मुग्धे ! दो मुझको तुम निर्दय अति दंत-दंश,
बाहु-वल्लि-बंधन-दृढ़, घन-स्तन-पीड़न-नृशंस—
चण्डि ! तुम्हीं सुख यों पाओ महान्
जावें चण्डाल मदन के बाणों से न प्राण." ३.

. . .

"शशिमुखि ! तव यह लहराती भ्रू काली
युवजन को मूर्छित करनेवाली कराल-काल-व्याली
और दूर करने को युवकों का भय तज्जन्य
तव अधर सीधु-सुधा ही सिद्ध-मंत्र अनन्य." ४.

. . .

"तन्वि ! वृथा
देता तव मौन व्यथा
रच दो अविलंब मधुर पंचम आलाप प्रिये !
सरस दृष्टि से अपनी हर दो यह ताप प्रिये !
सुमुखि ! त्याग दो विमुखी भाव सभी,
छोड़ो मुझको न कभी,
अतिशय ही स्निग्ध स्वयं
मुग्धे ! समुपस्थित लो ! तव प्रियतम." ५.

. . .

"स्निग्ध अधर सखि ! तव बंधूक-पुष्प-द्युति-बांधव,
गंड-युगल में मधूक-छवि अभिनव,
चंडि ! चपल लोचन तव
हरते हैं नीलकमल-कांति-विभव,
नासा में तिल-प्रसून-छवि सुलभा
दांतों में कुंद-प्रभा,
प्रायः कर तव मुख-सेवा सविनय
पुष्पायुध करता है विश्व-विजय." ६.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"आँखें तव मदालसा,
वदन इंदुमती स्वयं,
मंथर गति मनोरमा,
ऊरु न रंभा से कम,
रति ही तव कलावती,
भौंह चित्रलेखा तव,
भू पर ही सखि ! तुममें
स्वर्ग-युवतियां हैं सब." ७.

. . .

करते-करते मत्त कुवलयापीड़ संग रण निर्भर
राधा-पीन-पयोधर-स्मारक गंड-देश से लग्न
नव-भावोदय-मग्न
स्वेद-सिक्त-तन मीलित-लोचन हो जाते हैं क्षण भर
किंतु उसी क्षण देते हैं जब फेंक हस्ति को दूर
"जीता" "जीता" कंस-शोक-ध्वनि उठती है भरपूर—
हरि वे तव
प्रीति बढ़ावें नव नव. ८.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सानन्द गोविन्द

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहुत-बहुत कर अनुनय
मृगनयनी को कर संप्रीत-हृदय
वेश-रचे केशव को कुंज-शयन-गये देख
संध्या में
दृष्टि-विषय-वंध्या में
उस विषाद-रहिता को
वेशालंकार-क्रिया-सहिता को
राधा को बोली यों सखी एक—. १.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बीसवां संदर्भ

गीत

"बहुविध चाटु-वचन रचकर चरणों में प्रणति चढ़ा कर
संप्रति बेत-निकुंज गये हरि राजित केलि-शयन पर
मुग्धे ! अनुगत का अनुसरण करो राधिके !. १.

घन-स्तन-जघन-युते ! अब मृदु-गति-मंथर चरण बढ़ाओ,
मुखरित मणि-मंजीर बजाओ मंद मराल लजाओ. २.

अब रमणीय सुनो तरुणीजन-मोहन मधुरिपु-वाणी,
कुसुमायुध-शासन-बंदीजन पिक-कुल-रव कल्याणी. ३.

अनिल-तरल कर-पल्लव से ये लतिकायें तुमको री
प्रेरित-सी करभोरु ! कर रहीं अब न विलंब करो री. ४.

हरि-परिरंभ-अधीर स्फुरित मानों स्मर-वेग-रसों से
जलधारा-सम-विमल-हार-युत पूछो कुच-कलशों से. ५.

समझ रहीं सखियां भी वपु में यह तव रति-रण-सज्जा,
चण्डि ! बजा रसना-रव-डिण्डिम गमन करो तज लज्जा. ६.

गमन करो स्मर-शर-नख-सुंदर कर निज डाल सखी पर
बाट जोहते हरि को दो अवबोध सुना कंकण-स्वर." ७.

श्री जयदेव रचित यह बढ़कर हार तथा रमणी से
हरि में मनवालों की राजे निशिदिन कंठतटी में. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"वह मुझको देख रही, प्रेम कथा बोल रही,
अंग-अंग आलिंगन कर सुख से डोल रही,
रही बोल अस्फुट स्वर
और रही संगम कर
क्रम-क्रम से सोच-सोच यों मन में—
वे तुमको देख रहे, कांप रहे,
पुलकित-आनंदित हो मुक्त नहा स्वेद में अमाप रहे,
तुम्हें भेंटने के हित
अस्थिर उठ रहे और हाय ! हो रहे मूर्च्छित
फिर क्षण में
सखि ! प्रिय तव
तिमिर-पुंज-मय निकुंज में अभिनव." २.

...

आंखों में अंजन की रेख आँज,
कानों में नव तमाल-पुष्प साज,
शिर पर नव नील-कमल-दाम टाँक,
उरसिज पर कस्तूरी-पत्र आँक
सुलोचना
धूर्त्ता अभिसार-विषय-व्यग्र-मना
कामिनियों को निकुंज में असंग
नील-वसन सुंदर-तन
सर्वव्याप्त और सघन
अंधकार करता है आलिंगन अंग-अंग. ३.

...

काश्मीर-गौर-तन-वाली निशाभिसारिकाओं की रेखा
दीपित कर उनकी लावण्य-लेखा
तमाल-दल-सम घन-नील-तिमिर को बना रही
उनके प्रेम-हेम के लिये निकष-उपल-सदृश ही. ४.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुंदर हारावलि की,
कांचन-कांची-गुण की, नूपुर कंकण-मणि की
द्युति से दीपित झलमल
कुंज-निलय जो उसके द्वार देश स्थित अविचल
हरि को लखकर ठिठकी
लाज-भरी राधा से बोली यों प्राण सखी —. ५.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इक्कीसवां संदर्भ

गीत

"मंजुल केलि-निकुंज सदन में
माधव संग राधे ! विहरो जा
रम्य रभस-रति-हसित वदन ले. १.

नव अशोक-दल-शयन-सार में
माधव संग राधे ! विहरो जा
रम्य कलश-स्तन-तरल-हार ले. २.

कुसुम-रचित शुचि वास-गेह में
माधव संग राधे ! विहरो जा
रम्य कुसुम-सुकुमार-देह ले. ३.

मलय-पवन-वन-सुरभि शीत में
माधव संग राधे ! विहरो जा
रम्य वलित-रति-ललित गीत ले. ४.

विततत-वल्लि-नव-पल्लव-घन में
माधव संग राधे ! विहरो जा
रम्य अलस-चिर-पीन-जघन ले. ५.

मुदित मधुप-कुलकलित-राव में
माधव संग राधे ! विहरो जा
रम्य मदन-रस-सरस-भाव ले. ६.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुमधुर-पिक-कुल-नाद-मुखर में
माधव संग राधे ! विहरो जा
रम्य दशन-रुचि-रुचिर-शिखर ले." ७.

सुविहित पद्मा-सुख-समाज में
हे मुरारि ! मंगल शत शत दो
बसो सुकवि जयदेव-राज में. ८.

...

"तुम्हें चित्त में करने के कारण वहन सदा
अतिशय जो श्रांत,
औ अनंग के करने के कारण दहन सदा
तापित जो क्लांत—
चाह रहा पाना तव बिंब-अधर
सुधा-मधुर शीतल चिर,
क्षण के ही लिये अतः
अंक करो शोभित यह,
लव भर-भ्रू-क्षेप-कला-शोभा से क्रीत अहो !
दास-सदृश पादांबुज-सेवी से संभ्रम क्या भला कहो ?" ६.

...

भीति हर्ष दोनों के साथ
हरि पर कर लोलुप दृक्-पात
बजा मधुर मंजुल मंजीर
गई कुंज-गृह में वह धीर. ७.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाईसवां संदर्भ

गीत

राधा-वदन-विलोकन से बहु भावावेग-विचंचल
जलनिधि-सा विधु-दर्शन से जो शत-तरंग-उच्छृंखल
हरि एकभाव केवल विलास-चिन्तनपर
राधा ने देखा हर्षित-मुख उनको स्मर-रस-सुंदर. १.

हार विमल मुक्ताफल-युत आलंबित उर में उज्ज्वल
प्रस्फुट-फेन-समूह-सुशोभित ज्यों यमुना-जल निर्मल. २.

गौर-दुकूल-विमंडित सुंदर श्यामल मृदुल कलेवर
विकसित नील नलिन-सा मानों पीत-पराग-पटल-भर. ३.

जनित करे रति-राग वदन जिसमें चल नयन मनोहर
खेल रहे युग-खंजन नील कमल में शरद सरोवर. ४.

वदन-कमल छूने को आये दो रवि-कुंडल अभिनव
उपजाता रति-लोभ कुसुम-स्मित-युक्त अधर का पल्लव. ५.

सकुसुम केश कि जलधर जिससे छूटीं शशि-किरनें कल
चंदन-तिलक तिमिर में मानों स्फुट विधु-मंडल निर्मल. ६.

विपुल-पुलक-कंटकित देह रति-क्रीड़ा के हित व्याकुल
मणि-गण-किरण-समुज्ज्वल भूषण से तन सुंदर संकुल. ७.

श्री जयदेव-रचित रस-भूषण-वैभव द्विगुणित-कारी
सुकृत-सार हरि को उर में धर प्रणमो चिर नर-नारी. ८.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In,Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रियतम-अवलोकन क्षण राधा के नेत्रों के
चंचल तारे जिनके ढलते उन क्षेत्रों के
कर अपांग का अतिक्रम
करने से श्रुति-पथ पर्यन्त गमन का उद्यम
स्वेद-विदुएं उनसे झरीं सुघर—
ऐसे झर पड़े हर्ष-अश्रु निकर. ८.

. . .

कृत्रिम खुजलो छल में हास छिपा प्रेममयी
सखियां जब कुंज-सदन के बाहर चली गयीं
मृगनयनी ने तब जा शयन पास
देखा जब स्मर-शर-आकुल प्रिय का सुभग आस्य—
लज्जा भी तब उनकी
लज्जा-वश दूर भगी. ९.

. . .

जयश्री द्वारा किये गये मंदार कुसुम से अर्चित-से,
गज-रण-रस-उल्लास-पूर्ण सिंदूर रंग से चर्चित-से
बाहु-युद्ध-क्रीड़ा में हत जो गज कुवलयापीड़ दुर्दण्ड
उसके रक्त कणों से मंडित जय प्रचंड हरि के भुजदंड. १०.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुप्रीत पीताम्बर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाहर जब चली गई सखी वृन्द
देख प्रिया राधा को—लाज मंद
निर्भर-स्मर-शर-सुंदर
स्मित से मृदु धुला अधर
सरसित-मन
बार बार पल्लव-नव-शयन ओर क्षिप्त नयन—
बोले हरि
मुर के अरि—. १.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेईसवां संदर्भ

गीत

"किसलय-सुखद-शयन पर कामिनि ! चरण-नलिन निखरें री
तव पद-पल्लव-वैरि पराभव अनुभव आज करें री
क्षण भर अनुगत नारायण को गहो राधिके !. १.

पूजूँ पद तव कर-कमलों से तुम सुदूर से आईं
ग्रहण करो शयनोपरि मुझको नूपुर सम पद-ध्यायी. २.

वदन-सुधानिधि-गलित अमृत-सम वचन मधुर रच दो री
दूर करूं इस विरह-सदृश स्तन-रोधक उर-पट को री. ३.

प्रिय-परिरंभ-अधीर पुलकमय दुर्लभ जो कि निहारो
मम उर पर कुच-कलश धरो, यह मनसिज-ताप निवारो. ४.

अधर-सुधारस से निज सुंदरि ! मृत-सम दास जिलाओ,
मन जिसका तुममें विरहानल-दग्ध-शरीर खिलाओ. ५.

शशिमुखि ! कंठ-वचन-अनुकारी मणि-रसना मुखरा दो,
पिक-स्वर सुन अति विकल श्रवण, दुख उनका दूर करा दो. ६.

विफल-रोष-वति ! विकल मुझे कर देख रहीं तुम जो री,
मीलित लज्जित दृग इस कारण, रति-खिन्ना मत हो री." ७.

श्री जयदेव-रचित-पद प्रतिपद मधुरिपु मोद सुहावे,
अविरत रसिकजनों के मन में रस-विनोद उपजावे. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निविड़ श्लेष में पुलकांकुर विशेष,
क्रीड़ाकुल अवलोकन में निमेष,
अधर-सुधा-पान-समय कोमल भाषण अनेक,
काम-कला-रण में हर्षातिरेक—
ये सब बाधक चिर भी
सुरतोदय-काल हुए प्रिय-सुख-साधक फिर भी. २.

. .

बांहों से सुसंयमित, पयोधरों-भार दमित,
दशनों से क्षत जिसका अधर हुआ है नियमित,
श्रोणी से आहत जो, नख से जो विद्ध अमित,
हाथों से केश खिंचे जाने से जो कि नमित,
पीने से अधर-सुधा
सम्मोहित जो बहुधा,
ऐसे भी कांत हुए तृप्त-काम
अहो ! काम की गति सर्वथा वाम !. ३.

. . .

निर्भर मारांक नाम रति-रण-रस-संगम में
उर पर कृत साहसयुत कान्त-विजय-उपक्रम में
दोनों गुरु जघन हुए उसके निस्पंद,
भुज-लतिकायें प्रशिथिल, उर कंपित और नयन बंद.
पौरुष-रस
कभी कहीं हुआ भला स्त्री के वश ?. ४.

. . .

लोचन हैं हुए बंद
गण्ड सहित मिले पुलक-भरे गण्ड
अविरल शीत्कार हेतु अस्फुट रति-काकु-निकर,
विकसित वर दंत-किरण-धौत अधर—
ऐसी अति-हर्ष-उदय हेतु अलस-शयना के
उस कुरंग-नयना के
सांसों के कारण जो उन्नत वक्षोज-उपरि
आलिंगन-रत जो हरि
चुंबन करते मुख को हैं अनन्य
परम धन्य. ५.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाटल-नख-चिह्न-युक्त हृदय-पटल,
नींद-कषायित दृक-दल,
अधर कि जो नहीं लाल,
विलुलित-घन-केश-जाल स्रस्त-माल,
कांचीगुण से खिसका
अंचल प्रशिथिल जिसका—
राधा के मानों ये रतिपति के पांच बाण
प्रात काल
गड़ हरि की आंखों में रहे साल
अद्भुत अति हा ! उनके मनःप्राण. ६.

. . .

"केश पाश रहा डोल,
तरल अलक के कारण स्वेद से सने कपोल,
छिन्न अधर की शोभा खिन्न पड़ी,
कुच-कलशों की छवि से हारी है हार लड़ी,
कांची कब से खिसकी,
स्थान न अपने है माला जिसकी,
वक्ष-जघन-स्थल अपने हाथों से ढांक रही,
लज्जा के साथ मुझे ताक रही—
ऐसी वह है चिर भी
हर्षित करती मुझको है फिर भी." ७.

. . .

सोच रहे जो मन में यों एकान्त
हरि को रति-उपरान्त
वह नितान्त खिन्नांगी राधा बोली ये मृदु छंद
सादर औ सानन्द—. ८.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चौबीसवां संदर्भ

गीत

"रच यदुनन्दन ! दो निज चन्दन-शीतल-हस्त-सरोज से
मृगमद-पत्रक-चित्र मनोभव-मंगल कलश-उरोज में."
बोली - वह - यदुनंदन - क्रीड़ित - हृदयानन्दन से. १.

"मम रति-नायक-शायक से बढ़ लोचन युगल निखार दो,
अलिकुल-सुंदर अधर-विलेपित कज्जल-रेख सुधार दो. २.

नयन-कुरंग-चपलता-रोधक सुंदर ये मम कान जो,
प्रिय ! उनमें धर दो वर कुंडल मनसिज-पाश समान जो. ३.

कमल-जयी मुख में रच दो प्रिय ! कुंतल से भ्रमरावली
हर्षजनक अति रोचक सुंदर अलक सजाकर हे छली !. ४.

मम कमलानन से श्रम-सीकर पोंछ उसे प्रिय ! साज दो,
शशिमुख मध्य कलंक-कला-सम मृगमद-सुतिलक आँज दो. ५.

रति-विलुलित रतिपति-ध्वज-चामर-सा यह चिकुर संवार दो,
अविकल-पंख-मयूर-सदृश उसमें प्रिय ! कुसुम उभार दो. ६.

रतिपति-गज-वर-कंदर-सी धन जघन-स्थली प्रिय ! साध दो,
मणि-रसना-वसनाभरणादि शुभाशय ! सुंदर बांध दो." ७.

श्री जयदेव वचन जय-मंडन सदय हृदय यह गान लो,
हरिपद-स्मरण-अमृत कलि-कल्मष-खंडनकर कर पान लो. ८.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उरसिज पर पत्र रचो, गंडों पर चित्र करो,
जघनों पर कांची रख कवरी में माल्य धरो,
हाथों में बांधो प्रिय ! रत्न-वलय,
चरणों में साधो मंजीर-सलय"—
सुन ऐसा
किया प्रीत पीतांबर ने वैसा. ९.

...

नाग-नायक को वना पर्यङ्क
अगण फण-मणि-श्रेणियों में प्रतिफलित अकलंक
दिव्य शत प्रतिबिंब कर जो संकलित अक्लांत
विश्व में व्याप्तित्व निज प्रकटा रहे अभ्रांत,
चरण-अंबुज-धारिणी वारिधि-सुता-छवि-केतु
सतत शत-शत लोचनों से देखने के हेतु
है रचा मानों कि जिसने एक काया-व्यूह—
वे करें रक्षा तुम्हारी ध्वंस कर प्रत्यूह. १०

...

...

क्षीर-सागर-तीर
मुझ स्वयंवर-परा तुमको न पा रूप-अधीर
शंभु ने सुंदरि ! लिया पी, सोचता हूं हंत !
कालकूट अनंत—
इस तरह कह पूर्वकालिक एक
कथा कमला को मनोहर
अन्य-मनसा कर उन्हें फिर वक्ष का आंचल हटाकर
जो रहे उर-कोरकों को देख—
हरि तुम्हारे
हों परम रक्षक सदा रे. ११

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कल कौशल संगीत-कला में, विष्णु चरण में ध्यान,
रस-विवेक शृंगार-तत्व सत्काव्य-कला-संधान,
प्राप्त करें सम्यक् विधि से ये सकल सुधी-जन-वृन्द
पढ़ सानन्द सदैव
कृष्ण संग जों एकतान पंडित कवि श्री जयदेव
रचित गीत-गोविन्द. १२.

...

मधु ! तव चिंता में माधुरी नहीं अरे,
कंकड़-सी तुम हो शर्करे !
द्राक्षे री ! कौन तुम्हें देखे ?
मृत हो तुम अमृत ! क्षीर ! जल रस के लेखे,
रोओ तुम आम !
छिपो भूमितल में कान्ताधर ! अभिराम—
जबतक जयदेव वचन अभिनव-शृंगार
सारस्वत-भाव-विभव भुवि में साकार. १३.

...

भोजदेव-वामादेवी-सुत श्री जयदेव-रचित यह परम अनिंद्य
शोभित हो प्रिय बंधु पराशर-आदि-कंठ में काव्य गीतगोविन्द. १४.

...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत-गोविन्दम्

प्रथमः सर्गः

सामोद-दामोदरः

मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै-
र्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय ।
इत्थं नन्द-निदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुञ्जद्रुमं
राधामाधवयोर्जयन्ति यमुना-कूले रहः केलयः । १.

वाग्देवता-चरित-चित्रित-चित्त-सद्मा
पद्मावती-चरण - चारण - चक्रवर्त्ती,
श्रीवासुदेव - रति-केलि-कथा-समेत-
मेतं करोति जयदेव-कविः प्रबन्धम् । २.

यदि हरि-स्मरणे सरसं मनो
यदि विलास-कलासु कुतूहलम् ।
मधुर - कोमल - कान्त - पदावलीं
शृणु तदा जयदेव-सरस्वतीम् । ३.

वाचः पल्लवयत्युमापतिधरः संदर्भ-शुद्धिं गिरां
जानीते जयदेव एव शरणः श्लाघ्यो दुरूह-द्रुते ।
शृङ्गारोत्तर - सत्प्रमेय - रचनैराचार्य - गोवर्द्धन-
स्पर्द्धी कोऽपि न विश्रुतः श्रुतिधरो धोयी कवि-क्ष्मापतिः । ४.

. . .

अथ प्रथमः सन्दर्भ

गीतम्

(मालव गौड़ रागेण रूपक तालेन च गीयते)

प्रलय-पयोधि-जले धृतवानसि वेदं,
विहित - वहित्र - चरित्रमखेदम् ।
केशव धृत-मीन-शरीर जय जगदीश हरे । १. (ध्रुवम्)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे,
धरणि - धरण - किण - चक्र - गरिष्ठे।
केशव धृत-कच्छप-रूप जय जगदीश हरे। २.

वसति दशन-शिखरे धरणी तव लग्ना,
शशिनि कलङ्क-कलेव निमग्ना।
केशव धृत-शूकर-रूप जय जगदीश हरे। ३.

तव कर-कमलवरे नखमद्भुत-शृङ्गम्,
दलित - हिरण्यकशिपु - तनु - भृङ्गम्
केशव धृत-नरहरिरूप जय जगदीश हरे। ४.

छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुत - वामन,
पद - नख - नीर - जनित - जन - पावन
केशव धृत-वामन-रूप जय जगदीश हरे। ५.

क्षत्रिय - रुधिरमये जगदपगत - पापं,
स्नपयसि पयसि शमित - भवतापम्।
केशव धृत-भृगु-पति-रूप जय जगदीश हरे। ६.

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पति-कमनीयं
दशमुख - मौलि - बलिं रमणीयम्।
केशव धृत-राम-शरीर जय जगदीश हरे। ७.

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं
हल - हति - भीति - मिलित - यमुनाभम्।
केशव धृत-हलधर-रूप जय जगदीश हरे। ८.

निन्दसि यज्ञ - विधेरहह - श्रुतिजातं,
सदय - हृदय - दर्शित - पशुघातम्।
केशव धृत-बुद्ध-शरीर जय जगदीश हरे। ९.

म्लेच्छ - निवह - निधने कलयसि करवालं,
धूमकेतुमिव किमपि करालम्।
केशव धुत-कल्कि-शरीर जय जगदीश हरे। १०.

श्रीजयदेव - कवेरिदमुदितमुदारं,
शृणु सुखदं शुभदं भव-सारम्,
केशव धृत-दश-विध-रूप जय जगदीश हरे। ११.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूगोलमुद्विभ्रते
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते ।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते,
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः । ५.

• • •

अथ द्वितीयः सन्दर्भः

गीतम्

(गुर्ज्जरी रागेण निःसार-तालेन च गीयते)

श्रित-कमला-कुच - मण्डल धृत - कुण्डल
कलित-ललित-वनमाल जय जय देव हरे । १. (ध्रुवम्)
दिनमणि - मण्डल - मण्डन भव - खण्डन
मुनिजन-मानस-हंस जय जय देव हरे । २.

कालिय - विषधर - गञ्जन जनरञ्जन
यदुकुल-नलिन-दिनेश जय जय देव हरे । ३.

मधु - मुर - नरक - विनाशन गरुड़ासन
सुरकुल-केलि-निदान जय जय देव हरे । ४.

अमल-कमल - दल - लोचन भव - मोचन
त्रिभुवन-भवन-निधान जय जय देव हरे । ५.

जनक - सुता - कृत - भूषण जित-दूषण
समर - शमित-दशकण्ठ जय जय देव हरे । ६.

अभिनव - जलधर - सुन्दर धृत - मन्दर
श्री-मुख-चन्द्र-चकोर जय जय देव हरे । ७.

तव चरणे प्रणता वयमिति भावय
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे । ८.
श्रीजयदेव - कवेरिदं कुरुते मुदम्
मङ्गलमुज्ज्वल-गीतम् जय जय देव हरे । ९.

पद्मा-पयोधर-तटी-परिरम्भ-लग्न-
काश्मीर-मुद्रितमुरो-मधुसूदनस्य ।
व्यक्तानुरागमिव खेलदनङ्गखेद-
स्वेदाम्बुपूरमनुपूरयतु प्रियं वः । ६.

• • •

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ तृतीयः सन्दर्भः

वसन्ते वासन्ती - कुसुम - सुकुमारैरवयवै-
र्भ्रमन्तीं कान्तारे बहु-विहित-कृष्णानुसरणाम् ।
अमन्दं कन्दर्प - ज्वर - जनित - चिन्ताकुलतया
बलद्राधां राधां सरसमिदमूचे सहचरी । ७.

गीतम्

(वसन्त रागेण यति तालेन च गीयते)

ललित - लवङ्गलता-परिशीलन-कोमल-मलय - समीरे ।
मधुकर-निकर-करम्बित-कोकिल-कूजित-कुञ्ज-कुटीरे ।
विहरति हरिरिह सरस वसन्ते,
नृत्यति युवतिजनेन समं सखि विरहि-जनस्य दुरन्ते । १. (ध्रुवम्)

उन्मद-मदन-मनोरथ - पथिक-वधूजन-जनित-विलापे ।
अलिकुल-सङ्कुल-कुसुम-समूह-निराकुल-बकुल-कलापे । २.

मृगमद- सौरभ - रभस-वशंवद-नवदल - माल-तमाले ।
युवजन-हृदय-विदारण-मनसिज-नखरुचि-किंशुकजाले । ३.

मदन-महीपति-कनक-दण्ड-रुचि-केशर-कुसुम-विकासे ।
मिलित-शिलीमुख-पाटलि-पटल-कृत-स्मर-तूण-विलासे । ४.

विगलित-लज्जित-जगदवलोकन-तरुण-करुण-कृतहासे ।
विरहि-निकृन्तन-कुन्त-मुखाकृति-केतकि - दन्तुरिताशे । ५.

माधविका-परिमल-ललिते नवमालिकयातिसुगन्धौ ।
मुनि-मनसामपि मोहन-कारिणि तरुणाकारण-बन्धौ । ६.

स्फुरदतिमुक्तलता-परिरम्भण-पुलकित-मुकुलित-चूते ।
वृन्दावन-विपिने परिसर-परिगत-यमुना-जल-पूते । ७.

श्री जयदेव-भणितमिदमुदयतु हरि-चरण-स्मृति-सारम् ।
सरस-वसन्त-समय-वन-वर्णनमनुगत-मदन-विकारम् । ८.

दर-विदलित-मल्ली-वल्लि-चञ्चत्-पराग-
प्रकटित-पटवासैर्वासयन् काननानि ।
इह हि दहति चेतः केतकी-गन्ध-बन्धुः
प्रसरदसमबाण — प्राणवद्गन्धवाहः । ८.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अद्योत्सङ्ग - वसद्भुजङ्ग - कवल - क्लेशादिवेशाचलं
प्रालेय - प्लवनेच्छयानुसरति श्रीखण्डशैलानिलः ।
किञ्च स्निग्ध-रसाल-मौलि-मुकुलान्यालोक्य हर्षोदयात्
उन्मीलन्ति कुहूः कुहूरिति कलोत्तालाः पिकानां गिरः । ९.

उन्मीलन्मधुगन्ध - लुब्ध - मधुप - व्याधूत - चूताङ्कुर-
क्रीड़त्-कोकिल-काकली-कलकलैरुद्गीर्ण कर्ण-ज्वराः ।
नीयन्ते पथिकैः कथं कथमपि ध्यानावधान-क्षण-
प्राप्त-प्राणसमा- समागम - रसोल्लासैरमी वासराः । १०.

. . .

अथ चतुर्थः सन्दर्भः

अनेक-नारी-परिरम्भ-संभ्रम-स्फुरन्मनोहारि-विलास-लालसम् ।
मुरारिमारादुपदर्शयन्त्यसौ सखीसमक्षं पुनराह राधिकाम् । ११.

गीतम्

(रामकिरी रागेण यतितालाभ्यां च गीयते)

चन्दन-चर्चित - नील - कलेवर पीतवसन - वनमाली ।
केलिचलन्मणि-कुण्डल - मण्डित-गण्डयुग - स्मितशाली ।
हरिरिह मुग्धवधू-निकरे विलासिनि विलसति केलिपरे । १. (ध्रुवम्)

पीन-पयोधर-भार-भरेण हरिं परिरभ्य सरागं ।
गोपवधूरनुगायति काचिदुदञ्चित - पञ्चम - रागम् । २.

कापि विलास-विलोल-विलोचन-खेलन-जनित-मनोजं ।
ध्यायति मुग्ध-वधूरधिकं मधुसूदन-वदन-सरोजम् । ३.

कापि कपोलतले मिलिता लपितुं किमपि श्रुतिमूले ।
चारु चुचुम्ब नितम्बवती दयितं पुलकैरनुकूले । ४.

केलि-कला-कुतुकेन च काचिदमुं यमुना-वन-कूले ।
मञ्जुल-वञ्जुल-कुञ्जगतं विचकर्ष करेण दुकूले । ५.

करतल-ताल-तरल-वलयावलि-कलित - कलस्वन-वंशे ।
रासरसे सह-नृत्यपरा हरिणा युवतिः प्रशशंसे । ६.

श्लिष्यति कामपि चुम्बति कामपि कामपि रमयति रामां ।
पश्यति सस्मित-चारुतरामपरामनुगच्छति वामाम् । ७.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीजयदेव-भणितमिदमद्भुत केशव - केलि - रहस्यं ।
विपिन-विनोद-कला-वलितं वितनोतु शुभानि यशस्यम् । ८.

विश्वेषामनुरञ्जनेन जनयन्नानन्दमिन्दीवर-
श्रेणी - श्यामल - कोमलैरुपनयन्नङ्गैरनङ्गोत्सवम् ।
स्वच्छन्दं व्रजसुन्दरीभिरभितः प्रत्यङ्गमालिङ्गितः
शृङ्गारः सखि मूर्त्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीड़ति । १२.

रासोल्लासभरेण विभ्रम - भृतामाभीर - वामभ्रुवा-
मभ्यर्णे परिरभ्य निर्भरमुरः प्रेमान्धया राधया
साधु त्वद्वदनं सुधामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुति-
व्याजादुद्भटचुम्बितः स्मितमनोहारी हरिः पातु वः । १३.

इति श्री गीतगोविन्दे महाकाव्ये सामोद-दामोदरो नाम प्रथमः सर्गः ।

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वितीयः सर्गः

अक्लेश-केशवः

विहरति वने राधा साधारण-प्रणये हरौ
विगलित-निजोत्कर्षादीर्ष्यावशेन गतान्यतः ।
क्वचिदपि लताकुञ्जे गुञ्जन्मधुव्रत-मण्डली-
मुखर-शिखरे लीना दीनाप्युवाच रहःसखीम् । १.

. . .

अथ पञ्चमः सन्दर्भः

गीतम्

(गुर्ज्जरी रागेण यति तालाभ्यां च गीयते)

सञ्चरदधर - सुधा-मधुर -ध्वनि-मुखरित-मोहन - वंशं ।
वलित-दृगञ्चल-चञ्चल-मौलि-कपोल-विलोल-वतंसम् ।
रासे हरिमिह विहित - विलासं
स्मरति मनो मम कृत-परिहासम् । १. (ध्रुवम्)

चन्द्रक-चारु -मयूर - शिखण्डक - मण्डल - वलयित-केशं ।
प्रचुर - पुरन्दर - धनुरनुरञ्जित -मेदुर-मुदिर - सुवेशम् । २.

गोप-कदम्ब - नितम्बवती - मुख - चुम्बन-लम्भित-लोभं ।
बन्धुजीव - मधुराधर - पल्लवमुल्लसित - स्मित-शोभम् । ३.

विपुल-पुलक-भुज - पल्लव-वलयित-वल्लव-युवति-सहस्रं ।
कर-चरणोरसि मणिगण-भूषण-किरण-विभिन्न-तमिस्रम् । ४.

जलद-पटल-चलदिन्दु-विनिन्दक - चन्दन-तिलक-ललाटं ।
पीन - पयोधर-परिसर - मर्दन-निर्दय - हृदय - कवाटम् । ५.

मणिमय - मकर - मनोहर-कुण्डल-मण्डित - गण्डमुदारं :
पीत-वसन मनुगत-मुनि-मनुज-सुरासुरवर-परिवारम् । ६.

विशद-कदम्ब-तले मिलितं कलि-कलुष-भयं शमयन्तं ।
मामपि किमपि तरङ्गदनङ्गदृशा मनसा रमयन्तम् । ७.

श्रीजयदेव - भणितमतिसुन्दर - मोहनमधुरिपु - रूपं ।
हरि-चरण-स्मरणं प्रति संप्रति पुण्यवतामनुरूपम् । ८.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गणयति गुणग्रामं भ्रामं भ्रमादपि नेहते
वहति च परीतोषं दोषं विमुञ्चति दूरतः।
युवतिषु वलत्तृष्णे कृष्णे विहारिणि मां विना
पुनरपि मनो वामं कामं करोति करोमि किम्। २.

. . .

अथ षष्ठः सन्दर्भः

गीतम्

(मालव गौड़ रागेण एकताली तालेन च गीयते)

निभृत-निकुञ्ज-गृहं गतया निशि रहसि निलीय वसन्तं।
चकित-विलोकित-सकल-दिशा-रति-रभस-भरेण हसन्तम्।
सखि हे केशि - मथनमुदारं
रमय मया सह मदन-मनोरथ-भावितया सविकारम्। १. (ध्रुवम्)

प्रथम - समागम - लज्जितया पटु-चाटु - शतैरनुकूलं।
मृदु-मधुर-स्मित-भावितया शिथिलीकृत-जघन-दुकूलम्। २.

किसलय-शयन-निवेशितया चिरमुरसि ममैव शयानं।
कृत-परिरम्भण-चुम्बनया परिरभ्य कृताधर-पानम्। ३.

अलस-निमीलित-लोचनया पुलकावलि - ललित-कपोलं।
श्रमजल - सकल - कलेवरया वर-मदन-मदादतिलोलम्। ४.

कोकिल-कलरव-कूजितया जित-मनसिज-तन्त्र-विचारं।
श्लथ-कुसुमाकुल-कुन्तलया नख-लिखित-घन-स्तन-भारम्। ५.

चरण-रणित-मणि - नूपुरया परिपूरित-सुरत - वितानं।
मुखर- विशृङ्खल-मेखलया सकच - ग्रह - चुम्बनदानम्। ६.

रति-सुख-समय-रसालसया दर-मुकुलित - नयन-सरोजं।
निःसह-निपतित-तनु-लतया मधुसूदन-मुदित-मनोजम्। ७.

श्रीजयदेव-भणित - मिदमतिशय-मधुरिपु-निधुवन-शीलं।
सुखमुत्कण्ठित - गोपवधू - कथितं वितनोतु सलीलम्। ८.

हस्त-स्रस्त-विलास-वंशमनृजु-भ्रू-वल्लिमद्वल्लवी-
वृन्दोत्सारि-दृगन्त-वीक्षितमति-स्वेदार्द्रगण्डस्थलम्।
मामुद्वीक्ष्य विलज्जित-स्मित-सुधा-मुग्धाननं कानने
गोविन्दं व्रजसुन्दरीगण-वृतं पश्यामि हृष्यामि च। ३.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुरालोकः स्तोक - स्तवक - नवकाशोक - लतिका-
विकाशः कासारोपवन - पवनोऽपि व्यथयति ।
अपि भ्राम्यद्भृङ्गी - रणित - रमणीया न मुकुल-
प्रसूतिश्चूतानां सखि शिखरिणीयं सुखयति । ४.

साकूत - स्मितमाकुलाकुल - गलद्धम्मिल्लमुल्लासित-
भ्रू-वल्ली कमलीक - दर्शित - भुजामूलार्द्धदृष्टस्तनम् ।
गोपीनां निभृतं निरीक्ष्य गमिताकाङ्क्षश्चिरं चिन्तयन्-
अन्तर्मुग्धमनोहरंहरतु वः क्लेशं नवः केशवः । ५.

इति श्री गीतगोविन्दे महाकाव्ये अक्लेश-केशवो नाम द्वितीयः सर्गः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृतीयः सर्गः

मुग्ध-मधुसूदनः

कंसारिरपि संसार-वासना-बन्ध-शृङ्खलाम् ।
राधामाधाय हृदये तत्याज व्रज-सुन्दरीः । १.

इतस्ततस्तामनुसृत्य राधिकामनङ्ग - बाण - व्रण - खिन्न - मानसः ।
कृतानुतापः स कलिन्द-नन्दिनी-तटान्त-कुञ्जे विषसाद माधवः । २.

• • •

अथ सप्तमः सन्दर्भः

गीतम्

(गुर्ज्जरी रागेण यति तालेन च गीयते)

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधू-निचयेन ।
सापराधतया मयापि न निवारितातिभयेन ।
हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव । १. (ध्रुवम्)

किं करिष्यति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण ।
किं धनेन जनेन किं मम जीवितेन गृहेण । २.

चिन्तयामि तदाननं कुटिल-भ्रु कोप-भरेण ।
शोणपद्ममिवोपरि भ्रमताकुलं भ्रमरेण । ३.

तामहं हृदि सङ्गतामनिशं भृशं रमयामि ।
किं वनेऽनुसरामि तामिह किं वृथा विलपामि । ४.

तन्वि खिन्नमसूयया हृदयं तवाकलयामि ।
तन्न वेद्मि कुतो गतासि न तेन तेऽनुनयामि । ५.

दृश्यसे पुरतो गतागतमेव मे विदधासि ।
किं पुरेव ससम्भ्रमं परिरम्भणं न ददासि । ६.

क्षम्यतामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि ।
देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि । ७.

वर्णितं जयदेवके हरेरिदं प्रवणेन ।
केन्दुबिल्व-समुद्र - सम्भव - रोहिणी - रमणेन । ८.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हृदि बिसलता-हारो नायं भुजङ्गम-नायकः
कुवलय - दल - श्रेणी कण्ठे न सा गरल-द्युतिः ।
मलयज-रजो नेदं भस्म प्रिया-रहिते मयि
प्रहर न हर-भ्रान्त्यानङ्ग क्रुधा किमु धावसि । ३.

पाणौ मा कुरु चूत-सायकममुं मा चापमारोपय
क्रीड़ा-निर्जित-विश्व मूर्च्छित-जनाघातेन किं पौरुषम् ।
तस्या एव मृगीदृशो मनसिज-प्रेङ्खत्कटाक्षाशुग-
श्रेणी-जर्जरितं मनागपि मनो नाद्यापि सन्धुक्ष ते । ४.

भ्रू - पल्लवो धनुरपाङ्ग - तरङ्गितानि
बाणा गुणः श्रवण-पालिरिति स्मरेण ।
तस्यामनङ्ग - जय - जङ्गम - देवताया-
मस्त्राणि निर्ज्जित - जगन्ति किमर्पितानि । ५.

भ्रू-चापे निहितः कटाक्ष-विशिखो निर्मातु मर्मव्यथां
श्यामात्मा कुटिलः करोतु कवरी-भारोऽपि मारोद्यमम् ।
मोहं तावदयञ्च तन्वि तनुतां बिम्बाधरो रागवान्
सद्वृत्तं स्तन-मण्डलं तव कथं प्राणैर्मम क्रीड़ति । ६.

तानि स्पर्श-सुखानि ते च तरलाः स्निग्धा दृशोर्विभ्रमा-
स्तद्वक्त्राम्बुज-सौरभं स च सुधास्यन्दी गिरां वक्रिमा ।
सा बिम्बाधर-माधुरीति विषयासङ्गेऽपि चेन्मानसं
तस्यां लग्न-समाधि हन्त विरह-व्याधिः कथं वर्द्धते । ७.

तिर्यक्-कण्ठ-विलोल-मौलि-तरलोत्तंसस्य वंशोच्चरद्-
गीति-स्थान-कृतावधान-ललना-लक्षैर्न संलक्षिताः ।
संमुग्धं मधुसूदनस्य मधुरे राधा-मुखेन्दौ मृदु-
स्पन्दं कन्दलिताश्चिरं दधतु वः क्षेमं कटाक्षोर्म्मयः । ८.

इति श्री गीतगोविन्दे महाकाव्ये मुग्ध-मधुसूदनो नाम तृतीयः सर्गः ।

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चतुर्थः सर्गः

स्निग्ध-मधुसूदनः

यमुना-तीर-वानीर-निकुञ्जे मन्दमास्थितं ।
प्राह प्रेम-भरोद्भ्रान्तं माधवं राधिका-सखी । १.

...

अथ अष्टमः सन्दर्भः

गीतम्

(कर्णाट रागेण एकतालीं तालाभ्यां च गीयते)

निन्दति चन्दनमिन्दु - किरणमनुविन्दति खेदमधीरम् ।
व्याल-निलय-मिलनेन गरलमिव कलयति मलय-समीरम् ।
सा विरहे तव दीना
माधव मनसिज-विशिख-भयादिव भावनया त्वयि लीना । १. (ध्रुवम्)

अविरल-निपतित-मदन-शरादिव भवदवनाय विशालम् ।
स्वहृदय - मर्मणि वर्म करोति सजल-नलिनी-दल-जालम् । २.

कुसुम-विशिख-शर - तल्पमनल्प - विलास-कला-कमनीयम् ।
व्रतमिव तव परिरम्भ-सुखाय करोति कुसुम-शयनीयम् । ३.

वहति च गलित-विलोचन-जलधरमानन-कमलमुदारम् ।
विधुमिव विकट विधुन्तुद-दन्त-दलन-गलितामृत-धारम् । ४.

विलिखति रहसि कुरङ्ग - मदेन भवन्तमसमशर-भूतम् ।
प्रणमति मकरमधो विनिधाय करे च शरं नवचूतम् । ५.

प्रतिपदमिदमपि निगदति माधव तव चरणे पतिताहम् ।
त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधानिधिरपि तनुते तनुदाहम् । ६.

ध्यान-लयेन पुरः परिकल्प्य भवन्तमतीव दुरापम् ।
विलपति हसति विषीदति रोदिति चञ्चति मुञ्चति तापम् । ७.

श्रीजयदेव - भणितमिदमधिकं यदि मनसा नटनीयम् ।
हरिविरहाकुल - वल्लव - युवति - सखी - वचनं पठनीयम् । ८.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आवासो विपिनायते प्रिय-सखी-मालापि जालायते
तापोऽपि श्वसितेन दाव-दहन-ज्वाला-कलापायते ।
सापि त्वद् विरहेण हन्त हरिणी-रूपायते हा कथं
कन्दर्पोऽपि यमायते विरचयञ्छार्दूल-विक्रीड़ितम् । २.

. . .

अथ नवमः सन्दर्भः

गीतम्

(देश-रागेण एकतालीं तालेन च गीयते)

स्तन - विनिहितमपि हारमुदारम् ।
सा मनुते कृश - तनुरिव भारम् ।
राधिका विरहे तव केशव । १. (ध्रुवम्)

सरस - मसृणमपि मलयज - पङ्कम् ।
पश्यति विषमिव वपुषि सशङ्कम् । २.

श्वसित - पवनमनुपम - परिणाहम् ।
मदन - दहनमिव वहति सदाहम् । ३.

दिशि दिशि किरति सजल-कण-जालम् ।
नयन - नलिनमिव विदलितनालम् । ४.

नयन - विषयमपि किशलय-तल्पम् ।
गणयति विहित - हुताश - विकल्पम् । ५.

त्यजति न पाणि - तलेन कपोलम् ।
बाल - शशिनमिव सायमलोलम् । ६.

हरिरिति हरिरिति जपति सकामम् ।
विरह - विहित - मरणेव निकामम् । ७.

श्रीजयदेव - भणितमिति गीतम् ।
सुखयतु केशव - पदमुपनीतम् । ८.

सा रोमाञ्चति शीत्करोति विलपत्युत्कम्पते ताम्यति
ध्यायत्युद्भ्राम्यति प्रमीलति पतत्युद्याति मूर्च्छत्यपि ।
एतावत्यतनु-ज्वरे वर - तनु - र्जीवेन्न किं ते रसात्
स्ववँद्य-प्रतिम प्रसीदसि यदि त्यक्तोऽन्यथा हस्तकः । ३.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्मरातुरां दैवत-वद्य-हृद्य त्वदङ्ग-सङ्गामृत-मात्र-साध्याम् ।
विमुक्त-बाधां कुरुषे न राधामुपेन्द्रवज्रादपि दारुणोऽसि । ४.

कन्दर्प - ज्वर - संज्वरातुरतनोराश्चर्यमस्याश्चिरं
चेतश्चन्दन-चन्द्रमः-कमलिनी-चिन्तासु संताम्यति ।
किन्तु क्षान्ति-रसेन शीतलतरं त्वामेकमेव प्रियं
ध्यायन्ती-रहसि स्थिता कथमपि क्षीणा क्षणं प्राणिति । ५.

क्षणमपि विरहः पुरा न सेहे नयन - निमीलन - खिन्नया यया ते ।
श्वसिति कथमसौ रसाल-शाखां चिर-विरहेण विलोक्य पुष्पिताग्राम् । ६

वृष्टि - व्याकुल - गोकुलावन - रसादुद्धृत्य गोवर्द्धनं
विभ्रद्-वल्लव-वल्लभाभिरधिकानन्दाच्चिरं चुम्बितः ।
दर्पेणैव तदर्पिताधर - तटी-सिन्दूर - मुद्राङ्कितो
बाहुर्गोपतनोस्तनोतु भवतां श्रेयांसि कंसद्विषः । ७.

इति श्री गीतगोविन्दे महाकाव्ये स्निग्ध-मधुसूदनो नाम चतुर्थः सर्गः ।

• • •

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पञ्चमः सर्गः

साकाङ्क्ष-पुण्डरीकाक्षः

अहमिह निवसामि याहि राधामनुनय मद्वचनेन चानयेथाः ।
इति मधुरिपुणा सखी नियुक्ता स्वयमिदमेत्य पुनर्जगाद राधाम् । १.

. . .

अथ दशमः सन्दर्भः

गीतम्

(देश-वराड़ी रागेण रूपक तालेन च गीयते)

बहति मलय - समीरे मदनमुपनिधाय ।
स्फुटति कुसुम-निकरे विरहि-हृदय-दलनाय ।
सखि हे सीदति तव विरहे वनमाली । १. (ध्रुवम्)

दहति शिशिर - मयूखे मरणमनुकरोति ।
पतति मदन-विशिखे विलपति विकलतरोऽति । २.

ध्वनति मधुप - समूहे श्रवणमपिदधाति ।
मनसि वलित-विरहे निशि निशि रुजमुपयाति । ३.

वसति विपिन-विताने त्यजति ललित-धाम ।
लुठति धरणि-शयने बहु विलपति तव नाम । ४.

रणति पिक - समवाये प्रतिविशमनुयाति ।
हसति मनुज-निचये निज विरहमपलपति नेति । ५.

स्फुरति कलरव-रावे स्मरति भणितमेव ।
तव रति-सुख-विभवे बहु गणयति-सुगुणमतीव । ६.

त्वदभिध-शुभद-मासं वदति नरि भृणोति ।
तमपि जपति सरसे पर-युवतिषु न रतिमुपैति । ७.

भणति कवि-जयदेव इति विरहविलसितेन ।
मनसि रभस - विभवे हरिरुदयतु सुकृतेन । ८.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्वं यत्र समं त्वया रतिपतेरासादिताः सिद्धय-
स्तस्मिन्नेव निकुञ्ज-मन्मथ-महातीर्थे पुनर्माधवम् ।
ध्यायंस्त्वामनिशं जपन्नपि तवैवालाप-मन्त्रावलीं
भूयस्त्वत्कुच-कुम्भ-निर्भर-परीरम्भामृतं वाञ्छति । २.

. . .

अथ एकादशः सन्दर्भः

गीतम्

(गुर्ज्जरी रागेण एकताली तालेन च गीयते)

रति-सुख-सारे गतमभिसारे मदन-मनोहर-वेशम् ।
न कुरु नितम्बिनि गमन-विलम्बनमनुसर तं हृदयेशम् ।
धीर - समीरे यमुना - तीरे वसति वने वनमाली ।
पीन-पयोधर - परिसर-मर्दन-चञ्चल - कर - युगशाली । १. (ध्रुवम्)

नाम - समेतं कृत - सङ्केतं वादयते मृदु वेणुम् ।
बहु मनुते ननु ते तनु-सङ्गत-पवन-चलितमपि रेणुम् । २.

पतति पतत्रे विचलित पत्रे शङ्कित-भवदुपयानम् ।
रचयति शयनं सचकित-नयनं पश्यति तव पन्थानम् । ३.

मुखरमधीरं त्यज मञ्जीरं रिपुमिव केलिषु लोलम् ।
चल सखि कुञ्जं सतिमिर-पुञ्जं शीलय नील-निचोलम् । ४.

उरसि मुरारेरुपहित-हारे घन इव तरल-बलाके ।
तड़िदिव पीते रति-विपरीते राजसि सुकृत-विपाके । ५.

विगलित-वसनं परिहृत-रसनं घटय जघनमपिधानम् ।
किसलय-शयने पङ्कज-नयने निधिमिव हर्ष-निधानम् । ६.

हरिरतिमानी-रजनिरिदानीमियमपि याति विरामम् ।
कुरु मम वचनं सत्वर-रचनं पूरय मधुरिपु-कामम् । ७.

श्रीजयदेवे कृत-हरि-सेवे भणति परम-रमणीयम् ।
प्रमुदित-हृदयं हरिमतिसदयं नमत सुकृत-कमनीयम् । ८.

विकिरति मुहुः श्वासानाशाः पुरो मुहुरीक्षते
प्रविशति मुहुः कुञ्जं गुञ्जन्मुहुर्बहु ताम्यति ।
रचयति मुहुः शय्यां पर्य्याकुलं मुहुरीक्षते
मदन-कदन-क्लान्तः कान्ते प्रियस्तव वर्त्तते । ३.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्वद्वाम्येन समं समग्रमधुना तिग्मांशुरस्तंगतो
गोविन्दस्य मनोरथेन च समं प्राप्तं तमः सान्द्रताम् ।
कोकानां करुण-स्वनेन सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना
तन्मुग्धे विफलं विलम्बनमसौ रम्योऽभिसार-क्षणः । ४.

आश्लेषादनु चुम्बनादनु नखोल्लेखादनु स्वान्तज-
प्रोद्बोधादनु सम्भ्रमादनु रतारम्भादनु प्रीतयोः ।
अन्यार्थं गतयोर्भ्रमान्मिलितयोः सम्भाषणैर्जानतो-
र्दम्पत्योरिह को न को न तमसि व्रीड़ा-विमिश्रो रसः । ५.

सभय-चकितं विन्यस्यन्तीं दृशौ तिमिरे पथि
प्रतितरु मुहुः स्थित्वा मन्दं पदानि वितन्वतीम् ।
कथमपि रहः प्राप्तामङ्गैरनङ्ग - तरङ्गिभिः
सुमुखि सुभगःपश्यन् स त्वामुपैतु कृतार्थताम् । ६.

राधा-मुग्ध-मुखारविन्द-मधुपस्त्रैलोक्य-मौलि-स्थली-
नेपथ्योचित - नील - रत्नमवनी - भारावतार-क्षमः ।
स्वच्छन्दं व्रज-सुन्दरी-जन-मनस्तोष-प्रदोषश्चिरं
कंस - ध्वंसन - धूमकेतुरवतु त्वां देवकी - नन्दनः । ७.

इति श्री गीतगोविन्दे महाकाव्येऽभिसारिका-वर्णने साकाङ्क्ष-पुण्डरीकाक्षो नाम पञ्चमः सर्गः ।

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षष्ठः सर्गः

धृष्ट-वैकुण्ठः

अथ तां गन्तुमशक्तां चिरमनुरक्तां लता-गृहे दृष्ट्वा ।
तच्चरितं गोविन्दे मनसिजमन्दे सखी प्राह । १.

...

अथ द्वादशः सन्दर्भः

गीतम्

(गुणकिरी रागेण रूपक तालेन च गीयते)

पश्यति दिशि दिशि रहसि भवन्तं ।
तदधर - मधुर - मधूनि पिवन्तम् ।
नाथ हरे सीदति राधा वास-गृहे । १. (ध्रुवम्)

त्वदभिसरण - रभसेन वलन्ती ।
पतति पदानि कियन्ति चलन्ती । २.

विहित-विशद-बिस-किशलय-वलया ।
जीवति परमिह तव रति-कलया । ३.

मुहुरवलोकित - मण्डन - लीला ।
मधुरिपुरहमिति भावन - शीला । ४.

त्वरितमुपैति न कथमभिसारं ।
हरिरिति वदति सखीमनुवारम् । ५.

श्लिष्यति चुम्बति जलधर-कल्पं ।
हरिरुपगत इति तिमिरमनल्पम् । ६.

भवति विलम्बिनि विगलित-लज्जा ।
विलपति रोदिति वासकसज्जा । ७.

श्रीजयदेव - कवेरिदमुदितं ।
रसिक - जनं तनुतामतिमुदितम् । ८.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विपुल - पुलक - पालिः स्फीत - शीत्कारमन्त-
र्जनित - जड़िम - काकु - व्याकुलं व्याहरन्ती
तव कितव विधायामन्द - कन्दर्प - चिन्तां
रस - जलधि - निमग्ना ध्यान - लग्ना मृगाक्षी । २.

अङ्गेष्वाभरणं करोति बहुशः पत्रेऽपि संचारिणि
प्राप्तं त्वां परिशङ्कते वितनुते शय्यां चिरं ध्यायति
इत्याकल्प-विकल्प-तल्प - रचना-संकल्प-लीला-शत-
व्यासक्तापि विना त्वया वरतनुर्नैषा निशां नेष्यति । ३.

किं विश्राम्यसि कृष्ण-भोगि-भवने भाण्डीर-भूमीरुहे
भ्रातर्यासि न दृष्टि-गोचरमितः सानन्द-नन्दास्पदम् ।
राधाया वचनं तदध्वगमुखान्नन्दान्तिके गोपतो
गोविन्दस्य जयन्ति सायमतिथि-प्राशस्त्य-गर्भा गिरः । ४.

इति श्री गीतगोविन्दे महाकाव्ये वासक-सज्जा-वर्णने धृष्ट-वैकुण्ठो नाम षष्ठः सर्गः ।

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सप्तमः सर्गः

नागर-नारायणः

अत्रान्तरे च कुलटा-कुल-वर्त्म-पात-
सञ्जात-पातक इव स्फुट-लाञ्छन-श्रीः ।
वृन्दावनान्तरमदीपयदंशु - जालै-
र्दिक् - सुन्दरी-वदन-चन्दन - बिन्दुरिन्दुः । १.

प्रसरति शशधर-बिम्बे विहित-विलम्बे च माधवे विधुरा ।
विरचित-विविध-विलापं सा परितापं चकारोच्चैः । २.

. . .

अथ त्रयोदशः सन्दर्भः

गीतम्

(मालव रागेण यति तालेन च गीयते)

कथित - समयेऽपि हरिरहह न ययौ वनं ।
मम विफलमिदममलमपि रूप - यौवनम् ।
यामि हे कमिह शरणं सखी-जन-वचन-वञ्चिता । १. (ध्रुवम्)

यदनुगमनाय निशि गहनमपि शीलितं ।
तेन मम हृदयमिदमसमशर - कीलितम् । २.

मम मरणमेव वरमति - वितथकेतना ।
किमिह विषहामि विरहानलमचेतना । ३.

मामहह विधुरयति मधुर - मधु - यामिनी ।
कापि हरिमनुभवति कृत - सुकृत - कामिनी । ४.

अहह कलयामि वलयादि - मणि - भूषणं ।
हरि - विरह - दहन-वहनेन बहु - दूषणम् । ५.

कुसुम - सुकुमार - तनुमतनु - शर - लीलया ।
त्वगपि हृदि हन्ति मामतिविषम - शीलया । ६.

अहमिह निवसामि न गणित - वन - वेतसा ।
स्मरति मधुसूदनो मामपि न चेतसा । ७.

हरि - चरण - शरण - जयदेव - कवि - भारती ।
वसतु हृदि युवतिरिव कोमल - कलावती । ८.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत् किं कामपि कामिनीमभिसृतः किंवा कला-केलिभि-
र्वंद्धो बन्धुभिरन्धकारिणि वनाभ्यर्णे किमुद्भ्राम्यति ।
कान्तः क्लान्तमना मनागपि पथि प्रस्थातुमेवाक्षमः
सङ्केतीकृत-मञ्जु-वञ्जुल-लताकुञ्जेऽपि यन्नागतः । ३.

अथागतां माधवमन्तरेण सखीमियं वीक्ष्य विषाद-मूकाम् ।
विशङ्कमाना रमितं कयापि जनार्दनं दृष्टवदेतदाह । ४.

. . .

अथ चतुर्दशः सन्दर्भः

गीतम्

(वसन्त रागेण यति तालेन च गीयते)

स्मर-समरोचित-विरचित-वेशा ।
दलित-कुसुम-दर-विलुलित-केशा ।
कापि मधुरिपुणा विलसित युवतिरधिकगुणा । १. (ध्रुवम्)

हरि-परिरम्भण-वलित-विकारा ।
कुच-कलशोपरि तरलित-हारा । २.

विचलदलक - ललितानन-चन्द्रा ।
तदधर-पान-रभस-कृत - तन्द्रा । ३.

चञ्चल-कुण्डल-ललित - कपोला ।
मुखरित-रसन-जघन-गति-लोला । ४.

दयित-विलोकित-लज्जित-हसिता ।
बहुविध-कूजित-रति-रस-रसिता । ५.

विपुल-पुलक-पृथु- वेपथु - भङ्गा ।
श्वसित-निमीलित-विकसदनङ्गा । ६.

श्रमजल-कण-भर-सुभग-शरीरा ।
परिपतितोरसि रति-रण-धीरा । ७.

श्रीजयदेव - भणित - हरि - रमितं ।
कलि-कलुषं जनयति परिशमितम् । ८.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विरह-पाण्डु-मुरारि-मुखाम्बुज-द्युतिरयं तिरयन्नपि वेदनाम् ।
विधुरतीव तनोति मनोभुवः सुहृदये हृदये मदन-व्यथाम् । ५.

. . .

पञ्चदशः सन्दर्भः

गीतम्

(गुर्ज्जरी रागेण एकतालीतालेन च गीयते)

समुदित-मदने रमणी-वदने चुम्बनं-वलिताधरे ।
मृगमद-तिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे ।
रमते यमुना-पुलिन-वने विजयी मुरारिरधुना । १. (ध्रुवम्)

घनचय-रुचिरे रचयति चिकुरे तरलित-तरुणानने ।
कुरुवक-कुसुमं चपला-सुषमं रतिपति-मृग-कानने । २.

घटयति सुघने कुच-युग-गगने मृगमद-रुचिरूषिते
मणि-सरममलं तारक-पटलं नख-पद-शशि-भूषिते । ३.

जित-बिस-शकले मृदु-भुज-युगले करतल-नलिनी-दले ।
मरकत-वलयं मधुकर-निचयं वितरति हिम-शीतले । ४.

रति-गृह-जघने विपुलापघने मनसिज-कनकासने ।
मणिमय-रसनं तोरण-हसनं विकिरति कृत-वासने । ५.

चरण-किशलये कमला-निलये नख-मणिगण-पूजिते ।
बहिरुपवरणं यावक-भरणं जनयति हृदि योजिते । ६.

रमयति सुभृशं कामपि सुदृशं खल-हलधर-सोदरे ।
किमफलमवसं चिरमिह विरसं वद सखि विटपोदरे । ७.

इह रस-भणने कृत-हरि-गुणने मधुरिपु-पद-सेवके ।
कलि-युग-चरितं न वसतु दुरितं कविनृप-जयदेवके । ८.

नायातः सखि निर्दयो यदि शठस्त्वं दूति किं दूयसे
स्वच्छन्दं बहुवल्लभः स रमते किं तत्र ते दूषणम् ।
पश्याद्य प्रिय-सङ्गमाय दयितस्याकृष्यमाणं गुणै-
रुत्कण्ठार्त्तिभरादिव स्फुटदिदं चेतः स्वयं यास्यति । ९.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ षोड़शः सन्दर्भः

गीतम्

(देश-वराड़ी रागेण रूपक तालेन च गीयते)

अनिल - तरल-कुवलय - नयनेन ।
तपति न सा किशलय-शयनेन ।
सखि या रमिता वनमालिना । १. (ध्रुवम्)

विकसित-सरसिज-ललित-मुखेन ।
स्फुटति न सा मनसिज-विशिखेन । २.

अमृत - मधुर - मृदुतर - वचनेन ।
ज्वलति न सा मलयज-पवनेन । ३.

स्थल - जलरुह - रुचिकर - चरणेन,
लुठति न सा हिमकर-किरणेन । ४.

सजल - जलद - समुदय - रुचिरेण ।
दहति न सा हृदि विरह-दवेन । ५.

कनक-निकष-रुचि-शुचि-वसनेन ।
श्वसिति न सा परिजन-हसनेन । ६.

सकल-भुवन-जन-वर-तरुणेन ।
वहति न सा रुजमति-करुणेन । ७.

श्री जयदेव - भणित - वचनेन ।
प्रविशतु हरिरपि हृदयमनेन । ८.

मनोभवानन्दन चन्दनानिल प्रसीद रे दक्षिण मुञ्च वामताम् ।
क्षणं जगत्प्राण विधाय माधवं पुरो मम प्राणहरो भविष्यसि । ७.

रिपुरिव सखी-संवासोऽयं शिखीव हिमानिलो
विषमिव सुधा-रश्मिर्यस्मिन् दुनोति मनोगते ।
हृदयमदये तस्मिन्नेवं पुनर्वलते बलात्
कुवलय-दृशां वामः कामो निकाम-निरङ्कुशः । ८.

बाधां विधेहि मलयानिल पञ्चबाण
प्राणान् गृहाण न गृहं पुनराश्रयिष्ये ।
किं ते कृतान्तभगिनि क्षमया तरङ्गै-
रङ्गानि सिञ्च मम शाम्यतु देह-दाहः । ९.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रातर्नील-निचोलमच्युतमुरः संवीतपीतांशुकं
राधायाश्चकितं विलोक्य हसति स्वैरं सखीमण्डले ।
व्रीड़ा-चञ्चलमञ्चलं नयनयोराधाय राधानने
स्मेरस्मेर-मुखोऽयमस्तु जगदानन्दाय नन्दात्मजः । १०.

इति श्री गीतगोविन्दे महाकाव्ये विप्रलब्धा-वर्णने नागर-नारायणो नाम सप्तमः सर्गः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अष्टमः सर्गः

विलक्ष-लक्ष्मीपतिः

अथ कथमपि यामिनीं विनीय स्मर-शर-जर्जरितापि सा प्रभाते ।
अनुनय-वचनं वदन्तुमग्रे प्रणतमपि प्रियमाह साभ्यसूयम् । १.

. . .

अथ सप्तदशः सन्दर्भः

गीतम्

(भैरवी रागेण यति तालेन च गीयते)

रजनि-जनित-गुरु-जागर-राग-कषायितमलस-निमेषं ।
वहति नयनमनुरागमिव स्फुटमुदित-रसाभिनिवेशम् ।
हरि हरि याहि माधव याहि केशव मा वद कैतव-वादं ।
तामनुसर सरसीरुह-लोचन या तव हरति विषादम् । १.(ध्रुवम्)

कज्जल-मलिन-विलोचन-चुम्बन-विरचित-नीलिम-रूपम् ।
दशन-वसनमरुणं तव कृष्ण तनोति तनोरनुरूपम् । २.

वपुरनुहरति तव स्मर-सङ्गर-खर-नखर-क्षत-रेखम् ।
मरकत-शकल-कलित-कलधौत-लिपेरिव रति-जयलेखम् । ३.

चरण-कमल-गलदलक्तक-सिक्तमिदं तव हृदयमुदारम् ।
दर्शयतीव बहिर्मदन-द्रुम-नव-किशलय-परिवारम् । ४.

दशन-पदं भवदधर-गतं मम जनयति चेतसि खेदम् ।
कथयति कथमधुनापि मया सह तव वपुरेतदभेदम् । ५.

बहिरिव मलिनतरं तव कृष्ण-मनोऽपि भविष्यति नूनम् ।
कथमथ वञ्चयसे जनमनुगतमसमशर-ज्वर-दूनम् । ६.

भ्रमति भवानबला-कवलाय वनेषु किमत्र विचित्रम् ।
प्रथयति पूतनिकैव वधू-वध-निर्दय-बाल-चरित्रम् । ७.

श्रीजयदेव-भणित-रति-वञ्चित-खण्डित-युवति-विलापम् ।
शृणुत सुधा-मधुरं विबुधा विबुधालयतोऽपि दुरापम् । ८.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तदेवं पश्यन्त्याः प्रसरदनुरागं बहिरिव
प्रिया - पादालक्त - च्छुरितमरुण - द्योति - हृदयम् ।
ममाद्य प्रख्यात-प्रणय-भर-भङ्गेन कितव
त्वदालोकः शोकादपि किमपि लज्जां जनयति । २.

अन्तर्मोहन - मौलि - घूर्णन - चलन्मन्दार - विस्रंसन
स्तब्धाकर्षण-दृष्टिहर्षण-महामन्त्रः कुरङ्गीदृशाम् ।
दृप्यद्दानव - दूयमान - दिविषद् - दुर्वारदुःखापदां
भ्रंशः कंसरिपोर्व्यपोहयतु वः श्रेयांसि वंशी-रवः । ३.

इति श्री गीतगोविन्दे महाकाव्ये खण्डिता-वर्णने विलक्ष-लक्ष्मीपतिर्नामाष्टमः सर्गः ।

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवमः सर्गः

मुग्ध-मुकुन्दः

तामथ मन्मथ-खिन्नां रति-रस-भिन्नां विषाद-सम्पन्नाम् ।
अनुचिन्तित-हरि-चरितां-कलहान्तरितामुवाच रहः सखी । १.

. . .

अथ अष्टादशः सन्दर्भः

गीतम

(रामकिरी रागेण यति तालेन च गीयते)

हरिरभिसरति वहति मृदुपवने ।
किमपरमधिकसुखं सखि भवने ।
माधवे मा कुरु मानिनि मानमये । १. (ध्रुवम्)

ताल - फलादपि गुरुमतिसरसं ।
किमु विफलीकुरुषे कुच-कलशम् । २.

कति न कथितमिदमनुपदमचिरं ।
मा परिहर हरि मतिशय-रुचिरम् । ३.

किमिति विषीदसि रोदिषि विकला ।
विहसति युवतिसभा तव सकला । ४.

मृदु-नलिनी-दल - शीलित - शयने ।
हरिमवलोकय सफलय नयने । ५.

जनयसि मनसि किमिति गुरुखेदं ।
शृणु मम वचनमनीहित-भेदम् । ६.

हरिरुपयातु वदतु बहु-मधुरं ।
किमिति करोषि हृदयमतिविधुरम् । ७.

श्री जयदेव - भणितमति - ललितं ।
सुखयतु रसिकजनं हरिचरितम् । ८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्निग्धे यत् परुषासि यत् प्रणमति स्तब्धासि यद् रागिणि
द्वेषस्थासि यदुन्मुखे विमुखतां यातासि तस्मिन् प्रिये ।
तद्युक्तं विपरीतकारिणि तव श्रीखण्ड-चर्चा विषं
शीतांशुस्तपनो हिमं हुतवहः क्रीड़ा-मुदो यातनाः । २.

सान्द्रानन्द - पुरन्दरादि - दिविषद् - वृन्दैरमन्दादरात्
आनम्रैर्मुकुटेन्द्रनीलमणिभिः सन्दर्शितेन्दिन्दिरम् ।
स्वच्छन्दं मकरन्द - सुन्दर - गलन्मन्दाकिनी - मेदुरं
श्री गोविन्द - पदारविन्दमशुभ - स्कन्दाय वन्दामहे । ३.

इति श्री गीतगोविन्दे महाकाव्ये कलहान्तरिता-वर्णने मुग्ध-मुकुन्दो नाम नवमः सर्गः ।

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दशमः सर्गः

मुग्ध-माधवः

अत्रान्तरे मसृण-रोष-वशामसीम- नि.श्वास-निःसहमुखीं सुमुखीमुपेत्य ।
सव्रीड़मीक्षित-सखी-वदनां प्रदोषे सानन्द-गद्गद-पदं हरिरित्युवाच । १.

. . .

अथ ऊनविंशः सन्दर्भः

गीतम्

(देश-वराड़ी रागेण अष्ट तालेन च गीयते)

वदसि यदि किञ्चिदपि दन्त-रुचि-कौमुदी हरति दर-तिमिरमतिघोरम् ।
स्फुरदधर-सीधवे तव वदन-चन्द्रमा रोचयति लोचन-चकोरम् ।
प्रिये चारुशीले मुञ्च मयि मानमनिदानं ।
सपदि मदनानलो दहति मम मानसं देहि मुख-कमल-मधु-पानम् । १.(ध्रुवम्)

सत्यमेवासि यदि सुदति मयि कोपिनी देहि खर-नखर-शर-घातम् ।
घटय भुज-बन्धनं जनय रद-खण्डनं येन वा भवति सुख-जातम् । २.

त्वमसि मम भूषणं त्वमसिमम जीवनं त्वमसि मम भव-जलधि-रत्नम् ।
भवतु भवतीह मयि सततमनुरोधिनी तत्र मम हृदयमतियत्नम् । ३.

नील-नलिनाभमपि तन्वि तव लोचनं धारयति कोकनद-रूपम् ।
कुसुम-शर-बाण-भावेन यदि रञ्जयसि कृष्णमिदमेतदनुरूपम् । ४.

स्फुरतु कुच-कुम्भयोरुपरि मणि-मञ्जरी रञ्जयतु तव हृदय-देशम् ।
रसतु रसनापि तव घन-जघन-मण्डले घोषयतु मन्मथ-निदेशम् । ५.

स्थल-कमल गञ्जनं मम हृदय-रञ्जनं जनित-रति-रङ्ग-परभागम् ।
भण मसृण-वाणि करवाणि चरणद्वयं सरस-लसदलक्तक-रागम् । ६.

स्मर-गरल-खण्डनं मम शिरसि मण्डनं देहि पद-पल्लवमुदारम् ।
ज्वलति मयि दारुणो मदन-कदनानलो हरतु तदुपाहित-विकारम् । ७.

इति चटुल-चाटु-पटु चारु मुर-वैरिणो राधिकामधि वचन-जातम् ।
जयति पद्मावती-रमण-जयदेव-कवि-भारती-भणितमतिशातम् । ८.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिहर कृतातङ्के शङ्कां त्वया सततं घन-
स्तन-जघनया-क्रान्ते स्वान्ते परानवकाशिनि ।
विशति वितनोरन्यो धन्यो न कोऽपि ममान्तरं
प्रणयिनि परीरम्भारम्भे विधेहि विधेयताम् । २.

मुग्धे विधेहि मयि निर्दय-दन्त-दंश-
दोर्वल्लि-बन्ध-निविड़-स्तन-पीड़नानि ।
चण्डि त्वमेव मुदमञ्च न पञ्चवाण-
चाण्डाल-काण्ड-दलनादसवः प्रयान्तु । ३.

शशिमुखि तव भाति भङ्गुर-भ्रू-
र्युव-जन - मोह - कराल - कालसर्पी ।
तदुदित-भय-भञ्जनाय यूनां
त्वदधर-सीधु-सुधैव सिद्ध-मन्त्रः । ४.

व्यथयति वृथा मौनं तन्वि प्रपञ्चय पञ्चमं
तरुणि मधुरालापैस्तापं विनोदय दृष्टिभिः ।
सुमुखि विमुखीभावं तावद्विमुञ्च न मुञ्च मां
स्वयमतिशयस्निग्धो मुग्धे प्रियोऽयमुपस्थितः । ५.

बन्धूक-द्युति-बान्धवोऽयमधरः स्निग्धो मधूकच्छवि-
र्गण्डे चण्डि चकास्ति नील-नलिन-श्री-मोचने लोचने ।
नासाभ्येति तिल-प्रसून-पदवीं कुन्दाभ-दन्ति प्रिये
प्रायस्त्वन्मुख-सेवया विजयते विश्वं स पुष्पायुधः । ६.

दृशौ तव मदालसे वदनमिन्दुसंदीपनं
गतिर्जन-मनोरमा विजित - रम्भमूरुद्वयम् ।
रतिस्तव कलावती रुचिर-चित्रलेखे भ्रुवा
वहो विबुध-यौवतं वहसि तन्वि पृथ्वीगता । ७.

प्रीतिं वस्तनुतां हरिः कुवलयापीड़ेन सार्धं रणे
राधा पीन-पयोधर - स्मरणकृत् - कुम्भेन सम्भेदवान् ।
यत्र स्विद्यति मीलति क्षणमथ क्षिप्ते द्विपे तत्क्षणात्
कंसस्यामलभूत् जितं जितमिति व्यामोह-कोलाहलः । ८.

इति श्री गीतगोविन्दे महाकाव्ये मानिनी-वर्णने मुग्ध-माधवो नाम दशमः सर्गः ।

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एकादशः सर्गः

सानन्द-गोविन्दः

सुचिरमनुनयेन प्रीणयित्वा मृगाक्षीं
गतवति कृतवेशे केशवे कुञ्ज-शय्याम् ।
रचित-रुचिर-भूषां दृष्टिमोषे प्रदोषे
स्फुरति निरवसादां कापि राधां जगाद । १ ।

. . .

अथ विंशः सन्दर्भः

गीतम्

(वसन्त रागेण यति तालेन च गीयते)

विरचित-चाटु-वचन-रचनं चरणे रचित-प्रणिपातम् ।
सम्प्रति मञ्जुल-वञ्जुल-सीमनि केलि-शयनमनुयातम् ।
मुग्धे मधु-मथनमनुगतमनुसर राधिके । १. (ध्रुवम्)

घन-जघन-स्तन-भार-भरे दर-मन्थर-चरण-विहारम् ।
मुखरित-मणि-मञ्जीरमुपैहि विधेहि मराल-निकारम् । २.

शृणु रमणीयतरं तरुणी-जन-मोहन-मधुरिपु-रावम् ।
कुसुम-शरासन-शासन-वन्दिनि पिक-निकरे भज भावम् । ३.

अनिल-तरल-किशलय-निकरेण करेण लता-निकुरम्बम् ।
प्रेरणमिव करभोरु करोति गतिं प्रति मुञ्च विलम्बम् । ४.

स्फुरितमनङ्ग-तरङ्ग-वशादिव सूचित-हरि-परिरम्भम् ।
पृच्छ मनोहर-हार-विमल-जलधारममुं कुच-कुम्भम् । ५.

अधिगतमखिल-सखीभिरिदं तव वपुरपि रति-रण-सज्जम् ।
चण्डि रणित-रशना-रव-डिण्डिम-मभिसर सरसमलज्जम् । ६.

स्मर-शर-सुभग-नखेन करेण सखीमवलम्ब्य सलीलम् ।
चल वलय-क्वणितैरवबोधय हरिमपि निजगतिशीलम् । ७.

श्री जयदेव - भणितमधरीकृत - हारमुदासितरामम् ।
हरि-विनिहित-मनसामधितिष्ठतु कण्ठ-तटीमविरामम् । ८.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा मां द्रक्ष्यति वक्ष्यति स्मर-कथां प्रत्यङ्गमालिङ्गनैः
प्रीतिं यास्यति रंस्यते सखि समागत्येति संचिन्तयन् ।
स त्वां पश्यति वेपते पुलकयत्यानन्दति स्विद्यति
प्रत्युद्गच्छति मूर्च्छति स्थिरतमः पुञ्जे निकुञ्जे प्रियः । २.

अक्ष्णोर्निक्षिपदञ्जनं श्रवणयोस्तापिच्छ-गुच्छावलीं
मूर्ध्नि श्याम-सरोज-दाम कुचयोः कस्तूरिका-पत्रकम् ।
धूर्तानामभिसार-सत्वर-हृदां विष्वङ् निकुञ्जे सखि
ध्वान्तं नील-निचोल-चारु सुदृशां प्रत्यङ्गमालिङ्गति । ३.

काश्मीर-गौर-वपुषामभिसारिकाणा-
मावद्धरेखमभितो रुचिमञ्जरीभिः ।
एतत् तमाल-दल-नील-तमं तमिस्रं
तत्प्रेम-हेम-निकषोपलतां तनोति । ४.

. . .

अथ एकविंशः सन्दर्भः

हारावली-तरल-काञ्चन-काञ्चिदाम्-
मञ्जीर-कङ्कण-मणि-द्युति-दीपितस्य
द्वारे निकुञ्ज-निलयस्य हरिं विलोक्य
व्रीड़ावतीमथ सखी निजगाद राधाम् । ५.

गीतम्

(वराड़ी रागेण रूपक तालेन च गीयते)

मञ्जुतर-कुञ्जतल-केलि-सदने
प्रविश राधे माधव-समीपमिह ।
विलस रति-रभस-हसित-वदने । १. (ध्रुवम्)

नव-भवदशोक-दल-शयन-सारे
प्रविश राधे माधव-समीपमिह ।
विलस कुच-कलश-तरल-हारे । २.

कुसुमचय-रचित-शुचि-वास-गेहे
प्रविश राधे माधव-समीपमिह ।
विलस कुसुम-सुकुमार-देहे । ३.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चल-मलय-वन-पवन-सुरभि-शीते
प्रविश राधे माधव समीपमिह ।
विलस रति-वलित-ललित-गीते । ४.

वितत-बहु-वल्लि-नव -पल्लव-घने
प्रविश राधे माधव-समीपमिह ।
विलस चिरमलस-पीन-जघने । ५.

मधु-मुदित-मधुप-कुल-कलित-रावे
प्रविश राधे माधव-समीपमिह ।
विलस - मदन - रस - सरस - भावे । ६.

मधुरतर-पिक-निकर-निनद-मुखरे
प्रविश राधे माधव-समीपमिह ।
विलस दशन-रुचि-रुचिर-शिखरे । ७.

विहित - पद्मावती - सुख - समाजे
कुरु मुरारे मङ्गलशतानि ।
भणति जयदेव-कविराज-राजे । ८.

त्वां चित्तेन चिरं वहन्नयमतिश्रान्तो भृशं तापितः
कन्दर्पेण च पातुमिच्छति सुधा-सम्बाध-बिम्बाधरम् ।
अस्याङ्कं तदलङ्कुरु क्षणमिह भ्रूक्षेप-लक्ष्मी-लव-
क्रीते दास इवोपसेवित-पदाम्भोजे कुतः सम्भ्रमः । ६.

सा ससाध्वक-सानन्दं गोविन्दे लोल-लोचना
शिञ्जान-मञ्जु-मञ्जीरं प्रविवेश निवेशनम् । ७.

. . .

अथ द्वाविंशः सन्दर्भः

गीतम्

(वराड़ी रागेण रूपक तालेन च गीयते)

राधा-वदन-विलोकन-विकसित-विविध-विकार-विभङ्गम् ।
जलनिधिमिव विधु-मण्डल-दर्शन-तरलित-तुङ्ग-तरङ्गम् ।
हरिमेकरसं चिरमभिलषित-विलासम् ।
सा ददर्श गुरुहर्ष-वशंवद-वदनमनङ्ग-विलासम् । १. (ध्रुवम्)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हारममलतर-तारमुरसि दधतं परिलम्ब्य विदूरम् ।
स्फुटतर-फेन-कदम्ब-करम्बितमिव यमुना-जल-पूरम् । २.

श्यामल-मृदुल-कलेवर-मण्डलमधिगत-गौरदुकूलम् ।
नील-नलिनमिव पीत-पराग-पटल-भर-वलयित-मूलम् । ३.

तरल-दृगञ्चल-चलन-मनोहर-वदन-जनित-रति-रागम् ।
स्फुट-कमलोदर-खेलित-खञ्जन-युगमिव शरदि तड़ागम् । ४.

वदन-कमल-परिशीलन-मिलित-मिहिर-सम-कुण्डल-शोभम् ।
स्मित-रुचि-कुसुम-समुल्लसिताधर-पल्लव-कृत-रति-लोभम् । ५.

शशि-किरण-च्छुरितोदर-जलधर-सुन्दर-सकुसुम-केशम् ।
तिमिरोदित-विधु-मण्डल-निर्मल-मलयज-तिलक-निवेशम् । ६.

विपुल-पुलक-भर-दन्तुरितं रतिकेलिकलाभिरधीरम् ।
मणिगण-किरण-समूह-समुज्ज्वल-भूषण-सुभग-शरीरम् । ७.

श्री जयदेव-भणित-विभव-द्विगुणीकृत-भूषण-भारम् ।
प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं सुचिरं सुकृतोदय-सारम् । ८.

अतिक्रम्यापाङ्गं श्रवण-पथ-पर्यन्त-गमन-
प्रयासेनैवाक्ष्णोस्तरलतरतारं पतितयोः ।
तदानीं राधायाः प्रियतम-समालोक-समये
पपात स्वेदाम्भः-प्रकर इव हर्षाश्रु-निकरः । ८.

भजन्त्यास्तल्पान्तं कृत-कपट-कण्डूति-पिहित-
स्मितं याते गेहाद बहिरवहितालीं-परिजने ।
प्रियास्यं पश्यन्त्याः स्मर-शर-समाहूत सुभगं
सलज्जा लज्जापि व्यगमदिव दूरं मृगदृशः । ९.

जय-श्री-विन्यस्तैर्महित इव मन्दार-कुसुमैः
स्वयं सिन्दूरेण द्विप-रण-मुदा मुद्रित इव ।
भुजापीड़-क्रीड़ाहृत-कुवलयापीड़-करिणः
प्रकीर्णासृग्-विन्दुर्जयति भुज-दण्डो मुरजितः । १०.

इति श्री गीतगोविन्दे महाकाव्ये अभिसारिका-वर्णने सानन्द-गोविन्दो नाम एकादशः सर्गः

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वादशः सर्गः

सुप्रीत-पीताम्बरः

गतवति सखीवृन्दे मन्दत्रपा-भर-निर्भर-
स्मर-शर-वशाकूत-स्फीत-स्मित-स्नपिताधरम् ।
सरस-मनसं दृष्ट्वा राधां मुहुर्नव-पल्लव-
प्रसव-शयने निक्षिप्ताङ्गीमुवाच हरिः प्रियाम् । १.

. . .

अथ त्रयोविंशः सन्दर्भः

गीतम्

(विभास रागेण एकताली तालेन च गीयते)

किशलय-शयन-तलेकुरु कामिनि चरण-नलिन-विनिवेशम्
तव पद-पल्लव-वैरि-पराभवमिदमनुभवतु सुवेशम् ।
क्षणमधुना नारायणमनुगतमनुभज राधिके । १.(ध्रुवम्)

कर-कमलेन करोमि चरणमहमागमितासि विदूरम् ।
क्षणमुपकुरु शयनोपरि मामिव नूपुरमनुगतिशूरम् । २.

वदन सुधानिधि-गलितममृतमिव रचय वचनमनुकूलम् ।
विरहमिवापनयामि पयोधर-रोधकमुरसि दुकूलम् । ३.

प्रिय-परिरम्भण-रभस-वलितमिव पुलकितमतिदुरवापम् ।
मदुरसि कुच-कलशं विनिवेशय शेषय मनसिज-तापम् । ४.

अधर-सुधा-रसमुपनय भामिनि जीवय मृतमिव दासम् ।
त्वयिविनिहित-मनसं विरहानल-दग्ध-वपुषमविलासम् । ५.

शशिमुखि मुखरय मणि-रसना-गुणमनुगुण-कण्ठ-निनादम् ।
श्रुति-पुट-युगले पिक-रुत-विकले शमय चिरादवसादम् । ६.

मामतिविफलरुषा विकलीकृतमवलोकितुमधुनेदम् ।
मीलित-लज्जितमिव नयनं तव विरम विसृज रति-खेदम् । ७.

श्रीजयदेव-भणितमिदमनुपद-निगदितमधुरिपु-मोदम् ।
जनयतु रसिक-जनेषु मनोरमयति-रस-भाव-विनोदम् । ८.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रत्यूहः पुलकाङ्कुरेण निविड़ाश्लेषे निमेषेण च
क्रीड़ाकूत-विलोकितेऽधर-सुधा-पाने कथा-नम्रभिः ।
आनन्दाधिगमेन मन्मथ-कला-युद्धेऽपि यस्मिन्नभू-
दुद्भूतः स तयोर्बभूव सुरतारम्भः प्रियम्भावुकः । २.

दोर्भ्यां संयमितः पयोधर-भरेणापीड़ितः पाणिजै-
राविद्धो दशनैः क्षताधर-पुटः श्रोणी-तटेनाहतः ।
हस्तेनानमितः कचेऽधर-सुधा-पानेन सम्मोहितः ।
कान्तः कामपि तृप्तिमाप तदहो कामस्य वामा गतिः । ३.

माराङ्के रति-केलि-सङ्कुल-रणारम्भे तया साहस-
प्रायं कान्त-जयाय किञ्चिदुपरि प्रारम्भि यत् सम्भ्रमात् ।
निस्पन्दा जघन-स्थली शिथिलिता दोर्वल्लिरुत्कम्पितं
वक्षो मीलितमक्षि पौरुष-रसः स्त्रीणां कुतः सिद्ध्यति । ४.

मीलद्दृष्टि-मिलत्कपोल-पुलकं शीत्कार-धारा-वशा
दव्यक्ताकुल-केलि-काकु-विलसद्दन्तांशु-धौताधरम् ।
श्वासोन्नद्ध-पयोधरोपरि-परिष्वङ्गी-कुरङ्गी-दृशो
हर्षोत्कर्ष-विमुक्ति-निःसह-तनोर्धन्यो धयत्याननम् । ५.

तस्याः पाटल-पाणिजाङ्कितमुरो निद्रा-कषाये दृशौ
निर्धौतोऽधर-शोणिमा विलुलिताः स्रस्तस्रजो मूर्द्धजाः ।
काञ्ची-दाम दर-श्लथाञ्चलमिति प्रातर्निखातैर्दृशो-
रेभिः काम-शरैस्तदद्भुतमभूत् पत्युर्मनः कीलितम् । ६.

व्यालोलः केश-पाशस्तरलितमलकैः स्वेदलोलौ कपोलौ
क्लिष्टा-दष्टाधर-श्रीः कुच-कलश-रुचा-हारिता हार-यष्टिः ।
काञ्ची काञ्चिद्गताशां स्तन-जघन-पदं पाणिनाच्छाद्य सद्यः
पश्यन्ती सत्रपं मां तदपि विलुलित-स्रग्धरेयं धिनोति । ७.

इति मनसा निगदन्तं सुरतान्ते सा नितान्त खिन्नाङ्गी
राधा जगाद सादरमिदमानन्देन गोविन्दम् । ८.

. . .

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ चतुर्विंशः सन्दर्भः

गीतम्

(रामकिरी रागेण यति तालेन च गीयते)

कुरु यदुनन्दन चन्दन-शिशिरतरेण करेण पयोधरे ।
मृगमद-पत्रकमत्र मनोभव-मङ्गल-कलश-सहोदरे ।
निजगाद सा यदुनन्दने क्रीड़ति हृदयानन्दने । १. (ध्रुवम्)

अलिकुल-गञ्जन-सञ्जनकं रतिनायक-शायक मोचने ।
त्वदधर-चुम्बन-लम्बित-कज्जलमुज्ज्वलय प्रिय लोचने । २.

नयन-कुरङ्ग-तरङ्ग-विलास-निरास-करे श्रुति-मण्डले ।
मनसिज-पाश-विलास-धरे शुभ-वेश निवेशय कुण्डले । ३.

भ्रमरचयं रचयन्तमुपरि रुचिरं सुचिरं मम सम्मुखे ।
जित-कमले विमले परिकर्मय नर्म-जनकमलकं मुखे । ४.

मृगमद-रस-वलितं ललितं कुरु तिलकमलिक-रजनीकरे ।
विहित-कलङ्क-कलं कमलानन विश्रमित-श्रम-शीकरे । ५.

मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद मानसज-ध्वज-चामरे ।
रति-गलिते-ललिते-कुसुमानि-शिखण्डि-शिखण्डक-डामरे । ६.

सरस-घने जघने मम शम्बर-दारण-वारण-कन्दरे ।
मणि-रसना-वसना-भरणानि शुभाशय वासय सुन्दरे । ७.

श्रीजयदेव-वचसि जयदे हृदयं सदयं कुरु मण्डने ।
हरि-चरण-स्मरणामृत-निर्मित-कलि-कलुष-ज्वर-खण्डने । ८.

रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयोः
घटय जघने काञ्चीमञ्च स्रजा कवरी-भरम्
कलय वलय-श्रेणीं पाणौ पदे कुरु नूपुरा
विति निगदितः प्रीतः पीताम्बरोऽपि तथाकरोत् । ९.

पर्यङ्कीकृत - नाग - नायक - फणा - श्रेणी - मणीनां गणे
सङ्क्रान्त-प्रतिविम्ब-सङ्कलनया विभ्रद् विभु-प्रक्रियाम् ।
पादाम्भोरुहधारि-वारिधि-सुतामक्ष्णां ददृक्षुः शतैः
कायव्यूहमिवाचरन्नुपचितीभूतो हरिः पातु वः । १०.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्वामप्राप्य मयि स्वयंवरपरां क्षीरोद-तीरोदरे
शङ्के सुन्दरि कालकूटमपिवन्मूढ़ो मृड़ानीपतिः ।
इत्थं पूर्व-कथाभिरन्यमनसो विक्षिप्य वक्षोऽञ्चलं
पद्मायाः स्तन-कोरकोपरि मिलन्नेत्रो हरिः पातु वः । ११.

यद् गान्धर्व-कलासु कौशलमनुध्यानञ्च यद् वैष्णवं
यच्छृङ्गार-विवेक-तत्त्वमपि यत् काव्येषु लीलायितम् ।
तत् सर्वं जयदेव-पण्डित-कवेः कृष्णैकतानात्मनः
सानन्दाः परिशोधयन्तु सुधियः श्रीगीतगोविन्दतः । १२.

साध्वी माध्वीक चिन्ता न भवति भवतः शर्करे कर्करासि
द्राक्षे द्रक्ष्यन्ति के त्वाममृत मृतमसि क्षीर नीरं रसस्ते ।
माकन्द क्रन्द कान्ताधर धरणितलं गच्छ यच्छन्ति यावद्
भावं शृङ्गार-सारस्वतमिह जयदेवस्य विष्वग् वचांसि । १३.

श्री भोजदेव-प्रभवस्य वामादेवी-सुत श्री जयदेवकस्य
पराशरादि-प्रियवन्धु-कण्ठे श्रीगीतगोविन्द-कवित्वमस्तु । १४.

इति श्री जयदेव-गोस्वामिकृतौ श्री गीतगोविन्दे महाकाव्ये सुप्रीत-पीताम्बरो नाम द्वादशः सर्गः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	४	यमुन-तट	यमुना-तट
१५	१	संदभ	संदर्भ
१८	१४	सुमुखी !	सुमुखी !"
२०	१०	निश्चय	निचय
२१	१७	सुमुखि-	सुमुखि !
४४	२४	जय."	जय.
४८	२	असार	अभिसार
८२	२४	अघर	अधर
८४	१६	घन	घन
८५	१	उरसिज	"उरसिज
,,	४	साधो	साधो
,,	१३	जिसने	जिनने
८७	२०	सन्दर्भ	सन्दर्भः
८८	१३	पायं	पापं
,,	३०	धुत	धृत
,,	३३	थुत	धृत
९४	१३	भावितया	भाषितया
९६	११	निवारिता	वारिता
,,	१२	(घ्रुवम्)	(ध्रुवम्)
,,	२४	वर्शनं	दर्शनं
,,	२५	जयदेवके	जयदेवकेन
९७	८	जर्जरित	जर्जरितं
,,	१३	भ्रू	भ्रू
९९	१२	बिषमिव	विषमिव
१००	१	वद्य	वैद्य
१०२	२	पुनर्माधवम्	पुनर्माधवः
१०५	१०	भ्रातर्यासि	प्रातर्याहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०८	३	पञ्चदशः	अथ पञ्चदशः
१२०	११	दन्तुरितं	दन्तुरितं
१२१	४	स्नपिताधरम्	स्नपिताधराम्
„	२६	मनोरमयति	मनोरम-रति
१२२	२	नम्रभिः	नर्मभिः
१२३	६	विलास	विकाश
„	२१	कपोलयोः	कपोलयो-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

● मधुर-कोमल-कान्त-पदावलीं शृणु तदा जयदेव-सरस्वतीम् ●

● दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ●

● ललित-लवङ्ग-लता-परिशीलन-कोमल-मलय-समीरे ●

● चन्दन-चर्चित-नील-कलेवर-पीतवसन-वनमाली ●

● धीर-समीरे यमुना-तीरे वसति वने वनमाली ●

● तामनुसर सरसीरुह-लोचन या तव हरति विषादम् ●

● त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनं ●

● स्मर-गरल खण्डनं मम शिरसि मण्डनं देहि पद-पल्लवमुदारम् ●

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri